श्रीमज्जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीरामभद्राचार्यमहाराजैः प्रणीतम्

श्रीराघवाभ्युदयम्

(एकांकिनाटकम्)

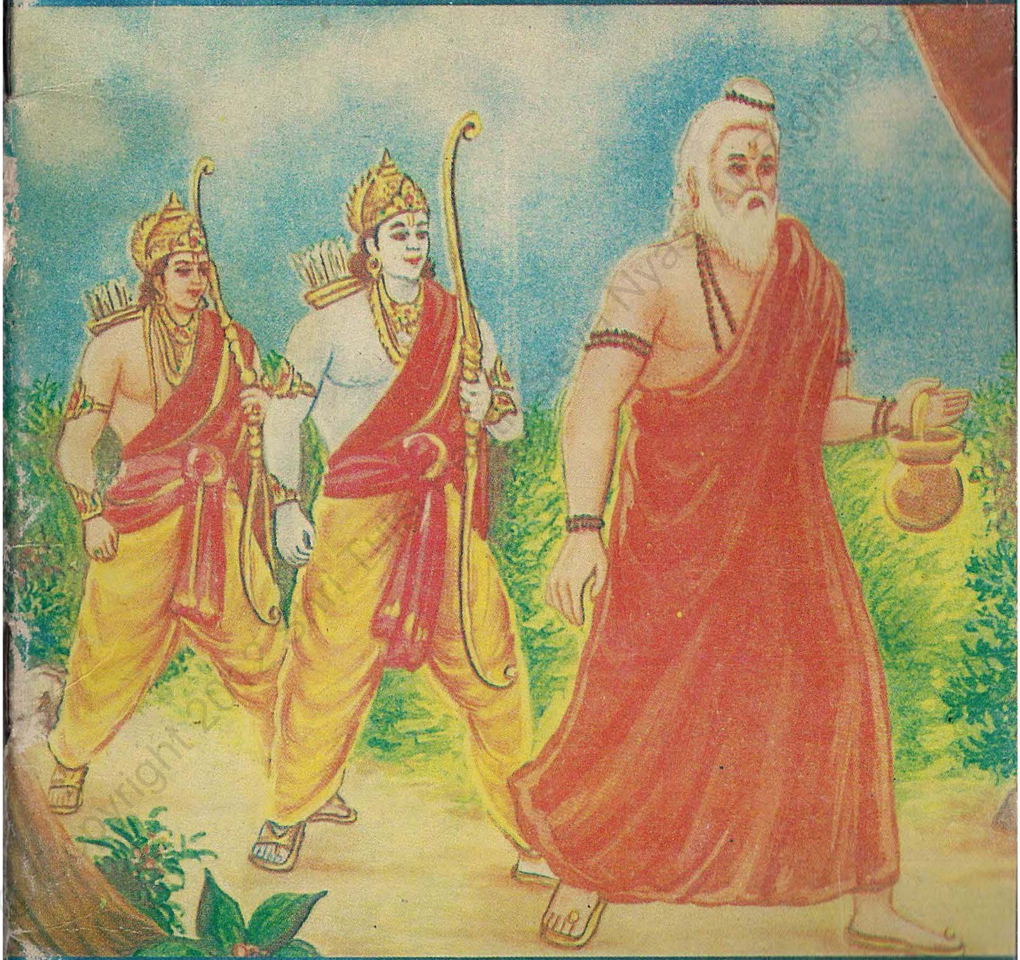

http://www.jagadgururambhadracharya.org/

श्रीतुलसी पीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य
स्वामी श्रीरामभद्राचार्य जी महाराजैः प्रणीतम्

श्रीराघवाभ्युदयम्

(एकांकिनाटकम्)

तुलसीपीठचित्रकूटधाम

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.

http://www.jagadgururambhadracharya.org/

प्रकाशक : श्री तुलसीपीठ सेवान्यास
तुलसीपीठ, आमोदवन, श्रीचित्रकूटधाम ।
जनपद सतना (म०प्र०)
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्राप्तिस्थान : १– चित्रकूटधाम
२– आचार्यदिवाकर शर्मा
२२० के, रामनगर, गाजियाबाद (उ०प्र०)

प्रथम संस्करण– श्रीरामनवमी वि.सं. २०५८

प्रतियाँ – २०००

सहयोग राशि– पञ्चदश रूप्यकाणि
१५,०० रू०

मुद्रक– डायनामिक प्रिन्टर्स,
एक्सप्रैस मार्केट, अम्बेडकर रोड़, गाजियाबाद।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

। श्रीमद्राराघवो विजयते ।

प्रास्ताविकम्

निगमजातमथो धनुषां नयं अधिजिगांसुरुदारपराक्रमः ।

विधिसुतान् मुदितः सममानुजैर्विजयते प्रथमः शिशुराघवः।।

सुविदितचरमेव तत्रभवतां भारतीभव्यानां यत् श्रव्यदृश्यात्मकं काव्यं द्विधा। दृश्यं नाम नाटककाव्यम् तच्चभेदप्रभेदबहुलम् । परं मया भगवदीयप्रेरणावशादविचारित किञ्चिन्नाटकलक्षणविशेषेण श्रीरामचरणसरसिजप्रेममकरन्दसमुत्साहित स्वान्तशेषेण स्वकीये षाण्मासिकदुग्धव्रतानुष्ठाने श्रीचित्रकूटे तुलसीपीठगुहायां तिष्ठता समनुतिष्ठता किमपि गद्यपद्यात्मकं निजोपासनानुरूपं स्वानुभूति प्रस्तुतीकरणरूपं श्रीराघवचरित्रानुगानमिव कालक्षेपधिया संव्यधायि। यत्र सुरभारत्यामेव यथामतिः श्रीराघवः स्मृतः बहुत्र छन्दःसु गीतोऽपि। सहजमेव भगवद्भजनप्रशान्तरजोगुणे श्रीराघववात्सल्यसाधनानुगुणे नितान्तमनिपुणेऽपि मनसि यद्यत्स्फुरितं तत्तदिह भगवत्प्रसादंमन्वानेन ६ ुन्वानेन च श्रीराघवकथास्वर्धुनीधूतत्रिविधसन्तापं कमनीयकल्पनाकलापं प्रस्तूय समभिष्टूय राजसूययाजकसुतं कौसल्या शुक्तिसम्भूतं परमाद्भुतं रामनीलरत्नं प्रकामं शान्तिरर्जिता। अनुष्ठानकाले श्रीरधुचन्द्रचरणकमल नखचन्द्रचन्द्रिकाध्वस्तध्वान्तान्तराले श्रीरामकथाफलके यत्किञ्चित्समनुभूतं तदेव समभवत् प्रस्तुतकृतिकथाकलेवरम् । इह मर्यादा कियदंशतस्त्राता इति मर्यादापुरुषोत्तम एव जानातु वयं तु -

गायं गायं रामचन्द्रस्य गाथा,
ध्यायं ध्यायं तत्पदाम्भोजयुग्मम् ।
वन्दं वन्दं तं तमालैकनीलं,
प्राप्ताः पारं घोरसंसारसिन्धोः ।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.

http://www.jagadgururambhadracharya.org/

अहं प्रत्येमि यत् श्रीराघवकृपालब्धाविर्भावं सम्पोषितराष्ट्रभावं वात्सल्यगंगातरंग तरलितान्तरंगं श्रीराघवाभ्युदयं नाम एकांकिनाटकम् राष्ट्रस्य श्रेयसे भगवद्भक्त्यै च कल्प्स्यते। मुद्रणव्ययं सादरं स्वीकुर्वाणाय राष्ट्रमुपकुर्वाणाय सभार्यासुताय गाजियाबादवास्तव्य श्रीमनमोहनगोयलाय सन्तु मे शुभाशीराशयः। मुद्रणत्रुटिनिराकरणपटवे अस्मद्विधेयाय श्रीदिवाकरशर्मणे शर्मावहं मङ्गलानुशंसनम् ।

राघवाभ्युदयं चैतद्राघवाय समर्पयन् ।

राघवे न्यस्तचित्तोऽहं राघवं लालयेऽनिशम् ।।

इति मङ्गलमाशास्ते

राघवीयो जगद्गुरु रामानन्दाचार्य रामभद्राचार्यः

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.

http://www.jagadgururambhadracharya.org/

। श्रीराघवो विजयतेतराम् ।

卐 एकांकिकारस्तवनम् 卐

राघवाभ्युदयं नाम वात्सल्यरससागरम् ।
एकांकिनाटकं येन कृतं बुद्ध्या विशुद्धया ।।१।।

शाणिखुर्दाह्वये ग्रामे जातं जौनपुराभिधे ।
मण्डले ह्युत्तरप्रान्ते भारतस्यार्यसत्तमम् ।। २।।

माघे शुक्ल एकादश्यां मकरं भास्करे गते।
यं शची शुषुवे देवी राजदेवात् द्विजोत्तमात् ।।३।।

द्विसहस्राधिके षष्ठे वैक्रमेऽब्द उरुक्रमे ।
धृतस्नेहक्रमं लब्ध्वा मुमुदे ब्राह्मणान्वयः ।।४।।

गीर्वाणभारतीभूतिं विभूतिं परमात्मनः ।
नाम्ना गिरिधरं पूर्वाश्रमे मिश्रोपनामकम् ५।।

विज्ञं वशिष्ठगोत्रीयं श्रोत्रियं श्रुतधारिणम् ।
विप्रं सरयुपारीणमखण्डब्रह्मचारिणम् ।
सम्प्रत्यच्युतगोत्रीयं चित्रकूटविहारिणम् ।
तुलसीपीठकर्तारं रामानन्दपदे स्थितम् ।।६।।

धर्मवर्णाश्रमाम्नाय गोरक्षाव्रतधारिणम् ।
अखण्डं भारतं भूयो द्रष्टुकामं दयामयम् ।।७।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

मर्यादारक्षकं लोक वेदानां भक्तभूषणम्।
शिक्षकं मूढचित्तानां निरस्ता शेषदूषणम् ।।८।।

परीक्षासु सदोत्तीर्णं प्रथमं प्रथमादिषु ।
विश्वविद्यालयीयासु प्रथमस्थानिकं सदा।।६।।

लब्धहैमपदकं प्रतिष्ठितं पण्डितस्य पदवीविभूषितम्।
वादिभीकरमहं स्वसद्गुरुं चिन्तये हृदि सदा जगद्गुरुम् ।। १० ।।

श्रीराघवकृपाटीकाकारमाचार्यपुङ्गवम् ।
श्रीरामभद्रनामानं रामानन्दं स्तुवे मुदा ।।११।।

राघवस्य शिशोः साक्षादाचार्यत्वे प्रतिष्ठितम् ।
सखायं कृष्णचन्द्रस्य स्तुवे तद्भावभावितम् ।।१२।।

कलिं विलोक्यानवलोक्यमत्यजत्,
दृशोः सुखं शैशवकाल एव यः ।
तमग्रगण्यं विदुषां स्वसद्गुरुं,
स्मरामि रामार्पितमानसं सदा ।। १३।।

प्रज्ञाचक्षुषमज्ञानध्वान्तध्वंसनभास्करम् ।
रामानन्दमहं वन्दे रामभद्राख्यमच्युतम् ।।१४।।

बाल्ये हि बालरघुनाथमना मनस्वी,
श्रीमत्पितामहमुखाद् धृतमानसो यः।
गीतावचांसि धृतवान् सकलानि कण्ठे,
वर्षेऽष्टमे गिरिधराख्यगुरुं स्तुवे तम् ।।१५।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

श्रुत्वा सकृत्कलितवान् कलिदोषमुक्तः,
शास्त्राणि यस्तु सकलानि कलावतारः।
अन्तर्दृशं गुरुवरं सदृशं हरेस्तम् ।
वन्दे सदा गिरिधरं हृदि भक्तिमन्तम्।।१६।।

जातो हरेर्गिरिधरस्य कलाविशेषो,
नाम्नाकृतो गिरिधरो गुरुभिः पुरा यः।
श्रीरामनामरससागरमग्नचेतो,
मीनं स्तुवे गुरुवरं तमहं कृपालुम् ।।१७।।

आचार्यरामभद्राय नमोऽन्तर्दिव्यचक्षुषे ।
ज्योतिर्धराय दान्ताय प्रशान्ताय नमो नमः ।।१८।।

नमो विद्वद्वरेण्याय शरण्याय महात्मने ।
रामानन्दावताराय कृष्णचन्द्रसखाय च ।। १९।।

कण्ठाग्रेकृतनिःशेषशास्त्रसाराय धीमते ।
शास्त्रार्थिनां धुरीणाय नमो वागीशरूपिणे ।।२०।।

श्रुतमात्रावबोधाय सकृत्संश्रुतधारिणे।
नमः स्वल्पपयःपाने क्लिष्टानुष्ठानकारिणे ।।२१।।

तेजःपुञ्जमयास्याय दास्यवात्सल्यभाविने।
मेधाविने नमस्तस्मै ह्यप्रमेय प्रभाविणे ।।२२।।

रामायणार्णवोत्थाय निर्मलाय कलामृते।
दाशरथेः कथागाथासुधासंस्राविने नमः ।।२३।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.

http://www.jagadgururambhadracharya.org/

नमोऽक्रुद्धाय बुद्धाय शुद्धायासद्विरोधिने।
संनिरुद्धमनोबुद्धिवृत्तये विजितात्मने।।२४।।

विप्रवंशावतंसाय संसारत्रासहारिणे।
नमः परमहंसाय योगिने ब्रह्मचारिणे।।२५।।

गुरुं मानसमर्मज्ञं गीतातत्वार्थकोविदम् ।
श्रीमद्भागवतव्याख्यात्राग्रगण्यमहं स्तुवे।।२६।।

हृदि गुरु वरपादपद्ममनिशमहं कलये कलेर्मलघ्नम्।
गुरुवरचरणाब्जचञ्चरीको यदि न भवामि गतं वृथा ममायुः ।।२७।।

परिचायकः स्तोता विनीत शिष्यः
स्नेही हरिदासो 'वृन्दावनीयः'

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas. All Rights Reserved.

http://www.jagadgururambhadracharya.org/

'श्री राघवम्युदयम्' एकांकी नाटक का
कथासार

श्रीमज्जगद्गुरु रामानन्दचार्य श्रीरामभद्रचार्य जी द्वारा प्रणीत यह एकांकी नाटक श्रीराघव के बालरूप की ऐसी दिव्यझाँकी प्रस्तुत करता है जो पाठकों एवं दर्शकों को वात्सल्य करुण एवं वीररस से आप्यायित कर श्रीरामभक्ति सुधासिन्धु में निमग्न कर देता है।

मंगलाचारण के अनन्तर एकांकी नाटक का आरम्भ मुनि वसिष्ठ के आश्रम से होता है। जहाँ श्रीराघव अनुजों एवं मित्रों के साथ खेल रहे हैं। श्रीराघव को लिवाने सुमन्त्र जी रथ लेकर आगये हैं यह देखकर वसिष्ठ जी उदास हैं। अपने शिष्य वामदेव के पूछने पर कहते हैं कि आज राघव अयोध्या को चले जायेंगे इसी कारण मेरा मन खिन्न है वामदेव के यह कहने पर कि कुलपति के आश्रम में तो शिष्यों के आने जाने की परम्परा ही है फिर आप जैसे विरागी को राग क्यों? तब वसिष्ठ जी कहते हैं अन्यत्र राग दूषण है किन्तु राघव के विषय में राग भूषण है। राघव सामान्य बालक नहीं अपितु त्रिभुवनपति महाविष्णु के संसार के हित के व्याज से कौसल्या जी के गर्भ से पुत्ररूप में अवतीर्ण हुए हैं। श्रीराघव अनुजों सहित गुरु वसिष्ठ जी को प्रणाम कर, जाने की आज्ञा माँगते हैं और वसिष्ठ जी द्वारा दक्षिणा शब्द कहकर रुक जाने पर उनका भाव समझकर भुजा उठाकर रावण बध की प्रतिज्ञा करते हैं।

उधर ऋषि विश्वामित्र अपने आश्रम में यज्ञ करने को उद्यत होते हैं परन्तु उनके शिष्य यह कहकर रोक देते हैं कि ताड़का सुबाहु और मारीच द्वारा मांस, रक्त की वर्षा के कारण से दूषित यज्ञशाला में आकर राक्षस याज्ञिकों को खा जाते है। विश्वामित्र जी ध्यानस्थ होकर जाने लेते हैं कि दुष्ट राक्षसों को दण्ड देने हेतु श्रीराम का अवतार हो चुका है। अतः विश्वामित्र यज्ञरक्षा हेतु श्रीराम को माँगने कोसलपुरी को जाते हैं।

उधर राजादशरथ मन्त्रियों तथा सभासदों सहित राजसभा में विराजमान हैं। द्वारपाल अनुजों सहित श्रीराम के गुरु वसिष्ठ जी के आश्रम से लौटने की

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas. All Rights Reserved.

http://www.jagadgururambhadracharya.org/

सूचना देता है। श्रीराम भाइयों सहित महाराज दशरथ को प्रणाम करते हैं। दशरथ जी उन्हें माताओं के पास जाने को कहते हैं। चारों भाई माताओं को प्रणाम कर उन्हें आनन्दित करते हैं। तभी द्वारपाल व्याकुल वाणी में मुनि विश्वामित्र के आगमन की सूचना देता है। राजादशरथ मुनि के सहसा आगमन पर चिन्तित होते हैं। और मुनि वसिष्ठ, रानियों तथा पुत्रो सहित विश्वामित्र जी का स्वागत करते हैं। श्रीराम को निहारकर ऋषि विश्वामित्र के चित्त की दशा विचित्र हो जाती है। कौसल्याजी से श्रीराम को गोद में लेने के लिए माँगते हैं परन्तु नेपथ्य से वसिष्ठ जी की पुत्रवधू अदृश्यन्ती कहती हैं कि महर्षि वसिष्ठ जी के पुत्रों के हत्यारे, निर्दय एवं निष्ठुर इस भिक्षुक को श्रीराघव को मत दो। विश्वामित्र सुनकर काँप जाते हैं और अदृश्यन्ती से क्षमा कर याचना करते है। अरुन्धती जी के समझाने पर अदृश्यन्ती क्षमा कर देती हैं और कौसल्या जी श्रीराघव को विश्वामित्र जी की गोद में दे देती हैं। मुनि विश्वामित्र श्रीराघव से यज्ञरक्षा, राक्षस विनाश और अहल्या उद्धार की प्रार्थना करते हैं।

आतिथ्य ग्रहण करने के पश्चात् मुनि विश्वामित्र मखरक्षाहेतु श्रीरालक्ष्मण को दशरथ जी से माँगते हैं। परन्तु महाराज दशरथ अत्यन्त कारुणिक स्वर में कहते हैं कि आप राज्य, धन, कोष सब कुछ ले लें परन्तु नयनाभिराम श्रीरामलक्ष्मण को न माँगें इनके बिना मैं न जी सकूँगा। कोसलपुरी भी अनाथ हो जायेगी। विश्वामित्र क्रुद्ध होते हैं और महर्षि वसिष्ठ के समझाने पर राजा दशरथ श्रीरामलक्ष्मण को मुनि विश्वामित्र को सौंप देते हैं। श्री रामलक्ष्मण माता पिता से आज्ञा लेकर भरत आदि को समझाकर वन को जाते हैं। मार्ग में राक्षसी राक्षसी ताड़का आजाती है। वह श्रीरामलक्ष्मण को देखकर मुग्ध हो जाती है किन्तु विश्वामित्र जी को खाने को दौड़ती है। मुनि के आदेश से श्रीराम एक ही बाण से ताड़का का वध कर देते हैं। विश्वामित्र जी प्रसन्न होकर श्रीराम को बला अतिबला नाम की विद्याएं तथा शस्त्र समूह प्रदान करते है। और स्वयं दण्डविधान का त्याग करते है। श्रीरामलक्ष्मण मुनि सहित उनके आश्रम में पहुँचकर आतिथ्य ग्रहण करते हैं। श्रीरामलक्ष्मण यज्ञरक्षा में तत्पर होते हैं और मुनिजन यज्ञ आरम्भ करते हैं। तभी मारीच और सुबाहु वहाँ आ धमकते हैं। मारीच मुनियों को आतंकित करता है किन्तु श्रीरामलक्ष्मण को देखकर मुग्ध हो जाता है। श्रीराम एक ही बाण से मारीच को यह कहकर दूर समुद्र में फैंक

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

देते हैं कि भविष्य में कपटमृग के बहाने रावण के विनाश की भूमिका के कारण मैं अभी इसे मारना नहीं चाहता। सुबाहु, मारीच को न देखकर क्रुद्ध होता है, श्रीराम आग्नेयबाण का सन्धान करके सुबाहु को क्षणभर में भस्म कर देते हैं। ऋषिगण प्रसन्न होते हैं देवगन्धर्व पुष्पवर्षा करते हैं। मुनि विश्वामित्र का मनोरथ सफल होता है और वे श्रीरामलक्ष्मण सहित राजाजनक के आमन्त्रण पर धनुर्यज्ञ देखने की इच्छा से मिथिलापुरी को प्रस्थान करते हैं तथा श्रीराम से कहते हैं कि हे राघव। धनुर्यज्ञ को देखकर यज्ञ की दक्षिणा के रूप में श्रीसीताजी का वरण करो। आपका कल्याण हो।

अन्त में एकांकीकार जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीरामभद्राचार्य जी महाराज भगवान श्रीराम से प्रार्थना करते हैं कि ताड़कासंहारक श्रीराघव पारस्परिक भेद से शून्य, राष्ट्रीयएकतावादी प्राणियों को सुखी करें, श्रीराम की भक्तिभागीरथी जनजन का मंगल करे। सम्पूर्ण भुवनों में श्रेष्ठ भारत में रामराज्य की स्थापना हो तथा श्री सीताराम हम सबके हृदय में निरन्तर वास करें

। इति शम् ।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.

http://www.jagadgururambhadracharya.org/

।।श्रीराघवो विजयते ।।

।। श्री रामानन्दचार्यो विजयते ।।

श्री राघवाभ्युदयम् एकांकिनाटकम्

मङ्गलाचरणम्

उर्वी गुर्वी प्रकुर्वन् पदकमलरुचा मेखलां यज्ञसूत्रम्,
बिभ्राणः शिक्षमाणो निगममपि धनुर्वेद्यविद्यां वसिष्ठात् ।
कन्दश्यामोऽभिरामो विहितजनमनस्सद्मवासो वसानः,
पातु श्रीरामचन्द्रस्त्वचमथरुचिरां रौरवीं रौरवान्नः ।।१।।

श्रीमज्जगद्गुरु रामानन्दाचार्य श्रीरामभद्राचार्य 'राघवाभ्युदयम् एकांकी नाटक की निर्विघ्न समाप्ति के लिये स्रग्धरा छन्द में अपने आराध्य भगवान् श्रीराम के स्मरणरूप आशीर्वादात्मक मंगलाचरण का विन्यास करते हैं।

जो भगवान् श्रीराम श्रीदशरथ के यहाँ अवतीर्ण होकर अपने कोमल चरणकमल की कान्ति से पृथ्वी को गौरवमयी बना रहे हैं तथा वसिष्ठ जी के आश्रम में ब्रह्मचारी की मर्यादा के अनुसार मेखला व यज्ञोपवीत को धारण करके रुरु मृग का चर्म पहनकर नियमपूर्वक ब्रह्मर्षि वसिष्ठ जी से षडङ्ग वेद एवं धनुर्विद्या का अभ्यास कर रहे हैं वे ही नीले बादल के समान श्यामल, भक्तों के हृदयसदन में निवास करने वाले प्रभु श्रीरामचन्द्र हमसब अर्थात् श्रीराघवाभ्युदयम् नाटक को पढ़ने वाले ओर उसके मंचन का दर्शन करने वाले सुधीजनों की घोर रौरव नरक से रक्षा करें ।।१।।

विशेष :– यहाँ प्रयुक्त रौरव शब्द असार संसार का उपलक्षण है।

अन्यच्च

दशरथसुरतरुकलिता कौसल्या किमपि फलं फलति ।
तत् पालयति सुमित्रा प्रकाममास्वादयति सीता ।।२।।

और भी ---

श्री दशरथरूप कल्पवृक्ष से सुशोभित कौसल्यारूप कल्पवल्लरी रामरूप एक अपूर्व फल को फलती हैं अर्थात् प्रकट करती हैं जिसका सुमित्रा जी पालन करती हैं परन्तु उसका पूर्ण आस्वादन श्रीसीताजी ही करती हैं। ।।२।।

विशेष – यहाँ रूपक अलंकार तथा आर्या वृत्त है ।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

हिन्दी भाषान्तर

मंगलाचरण

सीतारामौ परब्रह्म विग्रहौ समुपास्महे ।
वन्दामहे ततो भक्त्या श्रीसद्‌गुरुपदाम्बुजम् ।
राघवाभ्युदयं नाम दिव्यमेकांकिनाटकम् ।
श्रीरामभद्राचार्येण कृतं सत् सुधिया मया ।।
तदहं राष्ट्रभाषायां सर्वलोकसुखाय हि ।
'श्रीराघवकृपा'नाम्न्या टीकयालंकरोमि वै ।।

(ततः प्रविशति सपार्श्वगायकः सूत्रधारः)

सूत्रधारः (सस्मितम्) वयस्य अभिनन्दन ! किमपि श्रीसीतारामभक्तिभागीरथी कल्लोललालितमाधुर्य गीतमेकं समुद्‌गीयताम्। येन पारिषदा एते भगवद्‌भक्तिरसाप्लुता भवन्तु।

(इसके अनन्तर पार्श्वगायक के साथ सूत्रधार प्रवेश करता है।)

सूत्रधार– (मुस्कुराकर) मित्र अभिनन्दन ।भगवान श्रीसीताराम की भक्तिगंगा की तरंगों से जिसके माधुये का लालन किया हो ऐसा कोई अपूर्व गीत गाओ, जिससे ये सभासद भगवद्‌भक्तिरस से आप्लावित हों।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.

http://www.jagadgururambhadracharya.org/

अभिनन्दनः - (सूत्रधारं विलोक्य साञ्जलिः)

भद्र ! यथाज्ञाप्यते तत्रभवता तथैवानुतिष्ठामि। पश्यतु वसिष्ठाश्रमतपोने सखिभिः क्रीडन्तं सानुजं लोकलोचनाभिरामं रामम् ।

गायति गीतम्

खेलति शिशुः सखिभिर्वृतः सरयूतटे श्रीराघवः ।
शत्रुघ्नलक्ष्मणसंयुतो भरतादृतः करुणार्णवः।।
नवनीलनीरदसुन्दरः कलकम्रकेशरिकन्धरः ।
शरचापतूणमनोहरः सुभगो लसत्करलाघवः ।।
शरददिन्दुकान्तशुभाननो दनुजेन्द्रदावहुताशनः।
व्रीडितविपुलबलशासनो, हृतभक्तभीषणरौरवः ।।
नवनीलकञ्जविलोचनो, जनपापतापविमोचनः ।
शतकोटि दिनकरोचनो, गुरुसेवयाश्रितगौरवः ।।
कन्दुकधरः क्रीडति क्वचित् हरिशावकान् व्रीडति क्वचित् ।
गिरिधरहृदयसदने क्वचिद् विहरति भवाम्बुधिवाडवः ।।

अभिनन्दन – (सूत्रधार को देखकर हाथ जोडकर) भद्र ! आप जैसी आज्ञा दे रहे हैं मैं वैसा ही करूँगा । वसिष्ठजी के आश्रम के उपवन में अपने मित्रों के साथ खेलते हुए, लोगों के नेत्रों को आनन्द देनेवाले भगवान राम को देखें।

विशेष – "अनुतिष्ठामि" यहाँ वर्तमानकाल के समीपवर्ती भविष्यत् अर्थ में " वर्तमान सामीप्येवर्तमानवद्वा " इस पाणिनिसूत्र के अनुसार वर्तमानकाल का प्रयोग हुआ है।

गाता है – **गीत**

शत्रुघ्न लक्ष्मण के साथ भरत जी द्वारा सम्मानित करुणासमुद्र भगवान् श्रीराघव अपने बालसखाओं के सहित सरयू तट पर खेल रहे हैं। वे नवीन बादल के समान सुन्दर हैं तथा उनके स्कन्ध सिंह के सामन सुदृढ़ हैं। वे धनुष बाण धारण करने से अत्यन्त मनोहर वे सलोने लग रहे हैं और उनका बाण धारण करने से अत्यन्त मनोहर व सलोने लग रहे हैं और उनका बाण का निशाना बहुत ही सुहावना है। उनका मुख शरद कालीन चन्द्र के समान सुन्दर है तथा वे राक्षसरूप वन को जलाने के लिये अग्नि के समान हैं । उन्होंने अपने प्रताप से असंख्य इन्द्रों को लज्जित किया है और वे अपने भक्तों की भयंकर रौरव यातना को नष्ट कर डालते हैं। वे प्रभु श्रीराम नवीनकमल के समान नेत्रवाले, भक्तों के पाप–ताप को दूर करने वाले, कोटि–कोटि सूर्यो के समान प्रकाशमान तथा गुरुजनों की सेवा से परमगौरवान्वित हो रहे हैं। मित्र देखो, कहीं तो श्रीराघव गेंद खेल रहे हैं और कहीं अपने पराक्रम के सिहों के बच्चों को भी लज्जित कर देते हैं। और कहीं गिरिधिर अर्थात् प्रस्तुत नाटककार के हृदय सदन में विहार कर रहे हैं। वे इस संसारसागर को नष्ट करने के लिये वाडवाग्नि के समान हैं।

© Copyright 2012 Shri Tulsipeeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

सूत्रधारः - (सानुरागम्) साधु ! वयस्य, साधु । प्रकाममनुगृहीता वयम् गीतेनानेन।

अथैतद्भावानुरूपं श्रीचित्रकूटविहारिचिन्तनपरायणतुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरुरामानन्दाचार्य श्रीरामभद्राचार्यप्रणीतं वात्सल्यरसैकसारं परमोदारं श्रीराघवाभ्युदयनामधेयं एकांकिनाटकम् समभिनयन्तः दर्शकान् श्रीरामभक्तिसुधया समाह्लादयेम ।

पार्श्वगायकः - **भद्र ! अस्मिन् महामंगलकार्ये अलमतिविलम्बेन ।**

सूत्रधारः - **एवमेव । (निष्क्रान्तौ)**

सूत्रधार – (प्रेम पूर्वक) बहुत अच्छा मित्र बहुत अच्छा । इस गीत से हम लोग बहुत अनुगृहीत हुए हैं। अच्छा तो अब हम इस गीत के अनुरूप इस गीत से श्रीचित्रकूटविहारी भगवान् श्रीराम के चिन्तन में तत्पर श्रीतुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरुरामानन्दाचार्य श्रीरामभद्राचार्य द्वारा विरचित वातसल्यरस के सारसर्वस्व परम उदार अर्थात् बोधगम्य 'श्री राघवाभ्युदयम्' नामक एकांकी नाटक का अभिनय करते हुए दर्शकों को श्रीरामभक्तिसुधा से आनन्दमग्न कर दें।

पार्श्वगायक – हे मित्र ! इस महान मंगलमय कार्य में विलम्ब करना उचित नहीं।

सूत्रधार – ऐसा ही होगा ।

(दोनों निकल जाते हैं)

विशेष - यहाँ तक नाटक की प्रस्तावना थी अब नाटक का प्रथम दृश्य प्रारम्भ होता है।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas. All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

प्रथमदृश्यम्

(ततः प्रविशति सवामदेवः ब्रह्मर्षिर्वसिष्ठः किंचिन्म्लानमुखः)

वामदेवः - (आश्चर्यमुद्रां नाटयन्)

अये ! कथमिदं परमवीतरागस्य तपःस्वाध्यायतत्परस्य भगवतोऽस्मत्कुलपतेः किंचिन्म्लानमिव मुखारविन्दम्।

हन्त !

योऽसौकौशिकयोगाग्निदग्ध पुत्रशतोऽप्यहो।
नादूयत मनाक् सोऽद्य लक्ष्यते विमनाः कथम् ।।३।।

(कृताञ्जलिः) भगवन् ! अद्य कथमिव तुषारापहतपद्मकोशमिव श्रीमन्मुखं पश्यामि ।

वसिष्ठः - (नेत्रे विमृज्य) वत्स वामदेव !

सर्वज्ञोऽप्यज्ञमात्मानं लक्षयन् प्रश्नमास्थितः ।
वामदेववदद्यत्वं वामदेव विलोक्यसे ।।४।।

प्रथम दृश्य

इसके बाद वामदेव के सहित कुछ उदासमुखमुद्रा में ब्रह्मर्षि वसिष्ठ जी प्रवेश करते हैं।)

वामदेव – (आश्चर्यमुद्रा का अभिनय करते हुए) अरे! परमवीतराग तपस्या और वेदाध्ययन में तत्पर हमारे कुलपति भगवान् वसिष्ठ जी का मुखारविन्द इस प्रकार मलिन सा क्यों है? आश्चर्य है ! जो ब्रह्मर्षि वसिष्ठ, विश्वाामित्र की क्रोधाग्नि में अपने सौ पुत्रों के भस्म होने पर भी किंचिन्मात्र दुःखी नहीं हुए, अहो ! वे आज अन्यमनस्क क्यों दिख रहे हैं । ।।३।।

(हाथ जोड़कर) भगवन् ! आज मैं पाले से मारे हुए कमलपत्र के कोष की भाँति आपका मुखारविन्द उदास क्यों देख रहा हूँ ।

वसिष्ठ – (आँखें पोंछकर) वत्स वामदेव ! सर्वज्ञ होकर भी स्वयं को अज्ञ की भाँति दिखाते हुए प्रश्न कर रह हो? आज तो तुम अपने नाम को चरितार्थ करते हुए वामदेव अर्थात् भगवान शंकर की भाँति दिख रहे हो। ।।४।।

विशेष – यहाँ वामदेवशब्द श्लिष्ट होने से शंकर तथा ऋषि दोनों अर्थो का वाचक है।

कुलपति शब्द प्राचीन ऋषि परम्परा के एक गौरवशाली व्यक्तित्व का संकेतक है। पहले उसे कुलपति कहा जाता था, जो ब्राह्मण अपने गुरुकुल में दस हजार ब्रह्मचारी बटुओं का अन्नपानादि एवं शास्त्राध्ययन से लालन पालन करता था।

यो वै दश सहस्राणि स्वाश्रमे ब्रह्मचारिणाम् ।
तुष्णाति शास्त्रभोज्याद्यै स वै कुलपतिस्मृतः ।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas. All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

तथापि तवाग्रेवच्मि निजमनो वैक्लव्यहेतुम् । अद्यैव मत्तः समधिगत षडंगवेदसरहस्यधनुर्वेदो, विगलितखेदः सर्वविद्याव्रतस्नातः समग्रवाङ्.मयनिष्णातो मम रामभद्रः सम्पाद्य दीक्षाविधिं श्रीमदयोध्यां प्रतिष्ठास्यते । पश्य पुरतः सुमन्त्राधिष्ठितो दशरथरथो महारथमेनं प्रतीक्षते। इत्युक्त्वा सवाष्कण्ठो विरमति।

वामदेवः - (आत्मनि धैर्य धारयित्वा) समाश्वसितु समाश्वसितु आथर्वणः ! सर्वथा निर्विण्णचेतसो महर्षे अरून्धतीवल्लभस्य अस्थाने राग एषः ।

तथाहि-

यथा पीतजलाः सरोवराद्
व्रजन्ति चायान्तपरे पिपासवः ।
तथा मुनेः शिष्यपरम्परातती,
प्रवाहतो नित्यनवा च शाश्वती ।।४।।

फिर भी तुम्हारे समक्ष अपने मन की विकलता का कारण कह रहा हूँ। आज ही मुझसे षडङ्गवेद एवं रहस्यों के साथ धनुर्वेद का सम्यक् रीति से अध्ययन करके समस्त शास्त्राध्ययन से उत्पन्न श्रम को समाप्त कर समस्त विद्याव्रतों में कुशल होकर तथा सम्पूर्ण वैदिक वाङ.मय में निपुण होकर मेरे रामभद्र विधिवत् समावर्तन दीक्षा को सम्पन्न करके श्रीअयोध्या के लिये प्रस्थान करेंगे।

देखो, सामने देखो, यह सुमन्त्र द्वारा लाया गया महाराज दशरथ का रथ इन महारथी श्रीराम की प्रतीक्षा कर रहा है ऐसा कह कर वसिष्ठ जी अश्रुगद्गद्कण्ठ होकर चुप हो जाते हैं।

वामदेव– (स्वयं धैर्य धारण करके) हे अथर्ववेद के ज्ञाता महर्षि ! आप आश्वस्त हों। आश्वस्त हों ! सभी प्रकार से विरक्त हुए चित्तवाले अरुन्धती के प्राणपति आप श्रीवसिष्ठ के लिये इस प्रकार का राग अर्थात् राघव के प्रति लगाव सर्वथा अयोग्य है।

जिस प्रकार जल पीकर कतिपय पक्षी सरोवर से चले जाते हैं और तुरन्त ही दूसरे प्यासे पक्षी जल पीने के लिये सरोवर में आ जाते हैं, अर्थात् उनका आने जाने का क्रम बना रहता है उसी प्रकार मुनिकुल की शिष्य परम्परा नित्य नयी एवं शाश्वत बनी रहती है। तात्पर्य यह है कि जब कतिपय शिष्य विद्याध्ययन करके जाते हैं तब फिर दूसरे आ जाते हैं। जैसे सरोवर को जल पीकर जाने वाले पक्षी के प्रति न तो वियोग का अनुभव होता है और न ही आने वाले के प्रति आकर्षण, ठीक वही स्थिति कुलपति की भी होनी चाहिए।।५।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

बहवो रघुकुमाराः श्रीचरणैः पाठिता । तत्र नैतादृशो रागः

वसिष्ठः - (दीर्घ निःश्वस्य) न खलु, न खलु वामदेव !

वामदेव दुराराध्यं रामं राजीवलोचनम् ।
न सामान्यखगैरेवमुपमातुं त्वमर्हसि ।।६।।
हंसवंशाब्जहंसोऽयं हंसो हंसार्चितो हरिः ।
भ्राजते भक्तिमुक्ताढ्ये मुनिमानसमानसे ।।७।।

न सामान्यकुमार इवायं अतसिकुसुमसुकुमारः कौसल्याकुमारः ।

यतोहि अधीयानः शास्त्रं मयि कुलपतौ प्रीतिमतुलाम्,
वहन् वासं कुर्वन् मम तृणकुटीरे भुविशयः ।
गुणैर्भक्त्यावृत्या विनयविलसद् बल्गुवचसः,
मनोहृत्या रामः स्ववशमकरोन्मामपि वशी ।।८।।

आपने बहुत से रघुवंशी राजकुमारों को पढ़ाये परन्तु उनमें आपका इस प्रकार का राग नहीं था।

वसिष्ठ – (दीर्घ निःश्वास लेकर) नहीं नहीं, ऐसा नहीं वामदेव । है वामदेव ! वामदेव अर्थातृ भगवान शंकर के लिये भी दुराराध्य राजीवलोचन श्रीराम की तुम्हें सामान्य पक्षियों से उपमा नहीं देनी चाहिये ।।६।।

हे वामदेव ! श्री रामभद्र साक्षात् हरि श्रीमहाविष्णु हैं। जिनकी हंसवाहन ब्रह्मा एवं हंस जैसे नीरक्षीरविवेक रखनेवाले महात्मा पूजा करते हैं। ये हंस अर्थात् सूर्यवंशरूप कमल के सूर्य हैं तथा भक्तिरूप मोती से सुशोभित मुनिजनों के मनरूप मानसरोवर में राजहंस की भाँति सदैव विराजमान रहते हैं।

ये तीसी के फुल के समान सुकुमार कौसल्याकुमार कोई साधारण राजकुमार की भाँति नहीं है। क्योंकि शास्त्र का अध्ययन करते हुए मुझ कुलपति में अनुपम प्रेम रखते हुए, मेरी कुटिला में निवास करते हुए, पृथ्वी पर शयन करते हुए, उन परमसंयमशील राघव ने अपने दिव्य गुणों से, भक्ति से, दिव्य सेवा से विनय से सुशोभित मधुरवाणी से एवं अपनी मनोवृत्ति से, मुझको भी अपने वश में कर लिया है। ।।८।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas. All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

नायं प्राकृतो बालको वत्स ! एष हि वैदिकधर्मसमुद्दिधीर्षया त्रिभुवनपतिः पतितपावनः प्रभविष्णुर्महाविष्णुर्भुवनहितच्छलेन दशरथगृहे पुत्रीभूय समवातरत् ।

अतः -

अन्यत्र दूषणं रागो रामे रागस्तु भूषणम् ।
व्याले विषकरं क्षीरं बाले बलकरं पयः ।।६।।

वामदेव !

एतावन्ति दिनानि दीर्घतपसे रातानि तुष्टेन मे,
ब्रह्मानन्दसुधाममयानि विधिना पुण्यानि धन्यान्यलम्।
येष्वेनं नरलोकलोचनफलं रामं घनश्यामलम्,
साम्रेडं समपीपठं श्रुतिगणांस्तद्दर्शनाह्लादित ।।१०।।

वत्स ! यह साधारण बालक नहीं है। ये वैदिकधर्म के उद्धार की इच्छा से त्रिभुवनपति, पतितपावन परमसमर्थ महाविष्णु ही संसार के हित के व्याज से श्रीदशरथ की पत्नी कौसल्याजी के गर्भ से पुत्र बनकर अवतीर्ण हुए हैं।

इसलिए अन्यत्र किया हुआ राग दोष है किन्तु श्रीरामविषयक राग आभूषण है। जैसे सर्प में निहित दूध विषवर्धक हे किन्तु वही दूध बालक के लिये शक्तिवर्धक है ।।६।।

वामदेव !

मेरी दीर्घ तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान ब्रह्मा द्वारा मुझे इतने ही ब्रह्मानन्द सुधापूर्ण पवित्र एवं परमधन्य दिवस दिये गये थे, जिनमें मैंने प्रभु श्रीराम के दर्शनों से आह्लादित होकर मानो लोक के नेत्रों के फलस्वरूप घनश्याम श्रीराम को बारंबार श्रुतिगणों का अध्ययन कराया ।।१०।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

पुत्र ! रहस्यमेतदुद्घाटयामि । सर्गादौ ब्रह्मणा धर्मवर्मणा समर्थितोऽहं पौराहित्याय यदा नाङ्गीकृतवान् पापभीतः तदा रघुपतिभक्तिनम्रकन्धरं चतुराननेन मंदाननं चुम्बता समाश्वासितोऽहम् । वत्स!

हर्तुं महीभारमिमं महात्मा रामः परब्रह्ममनुष्यलोकम्,
गन्ता तदीयस्तु पुरोहितस्त्वं भूत्वा समायास्यसि भागधेयम् ।।११।।

अद्य भूतार्था सा पद्मयोनेः सरस्वती । विलोकय -

यस्य निःश्वसितं वेदो विद्या यस्मात् प्रजज्ञिरे ।
सोऽप्यभून्मामकश्छात्रः प्रभोरेतद् विडम्बनम् ।।१२।।

तस्मादद्य भगवद् वियोगमसहमानश्चिन्ताकुलोऽस्मि ।

पुत्र ! तुम्हारे समक्ष इस रहस्य को उद्घाटन कर रहा हूँ। सृष्टि के प्रारम्भ में जब धर्म का कवच धारण करने वाले पिताश्री ब्रह्मा के द्वारा पौराहित्य कर्म करने के लिये आदिष्ट होते हुए पाप के भय से इस कर्म को मैने नहीं स्वीकारा तब श्रीरामभक्ति से जिसका स्कन्ध कुछ झुक गया था, ऐसे मेरे मुख को चूमते हुए चतुर्मुख ब्रह्मा जी ने मुझे आश्वासन दिया था,

वत्स ! जब इस पृथ्वी का भार अपहरण करने के लिए परब्रह्म मनस्वी श्रीराम मर्त्यलोक में अवतार लेंगे, तब तुम उन्हीं के पुरोहित बनकर परमसौभाग्य प्राप्त कर लोगे ।।११।।

आज कमल से जन्म धारण करने वाले ब्रह्मा की वाणी सत्य हुई। देखो –वेद जिनके निःश्वास हैं और समस्त विद्याएँ जिनसे प्रकट हुई हैं वे सर्वज्ञ भगवान भी मेरे छात्र बने परमेश्वर की यही तो विडम्बना है ।।१२।।

इसलिये आज श्रीराम के वियोग को न सहन करने के कारण मैं चिन्ता से आतुर हो रहा हूँ ।

विशेष :- यहाँ असहमान इस पद में " लक्षणहेत्वोः क्रियायाः" इस सूत्र से शानच् प्रत्यय है।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

(हृदये हस्तं निधाय) अये !

श्वस्तः कमाहूय निजांकमारात् सुखं समारोप्य मुखं निरीक्ष्य ।
आनन्दसंहृष्टतनूरुहोऽहं शास्त्रं कथं वै परिपाठयिष्ये ।।१३।।

(इति वदन्नेव स्खलद्गात्रः वामदेवांके शिरोनिधाय अश्रूण्यावर्तयति)

वामदेवः- (वसिष्ठस्य शिरसि हस्तं परामृशन्)

(स्वगतम्)

योऽसौ विजित्य सहजेन च षट्सपत्नान्
निर्विद्य शान्तविपिने तपसा प्रशान्तः ।
सोऽयं रघूत्तममुखाब्जविलुब्धदृष्टि
र्वात्सल्यवारिधिनिमग्नमना विभाति ।।१४।।

(हृदय पर हाथ रख कर)

अरे ! कल से किसको अपने निकट बुला कर, सुखपूर्वक, मुख निहार कर, आनन्द से पुलकित शरीरवाला मैं अपनी गोद में बिठलाकर, किसप्रकार शास्त्रों का अध्ययन कराऊँगा । (इस प्रकार बोलते हुए लड़खड़ाते हुए वामदेव की गोद में शिर रख कर आँसू बहा रहे हैं)

वामदेव – (वसिष्ठ जी के सिर पर हाथ फेरते हुए अपने मन में) जो वसिष्ठ जी स्वभाव से काम, क्रोध, लोभ, मोह मात्सग्र इन छः विकार रूप शत्रुओं पर विजय प्राप्त करके शान्त तपोवन में अपनी तपस्या से परम शान्त जीवन व्यतीत कर रहे थे, आज श्रीराम के मुखकमल में परमलुब्ध दृष्टिवाले वही वसिष्ठ वात्सल्य सागर में अपने मन को मग्न करके खिन्न दिख रहे हैं। ।।१४।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

(अग्रेऽवलोक्यससंभ्रमम्) पश्यतु पश्यतु देवः !एष हि

पद्माभ्यर्चितप्रदपद्मपुण्यपरागरागरंजितभूमिभामिनीसीमन्तः

सौन्दर्यसारसुकुमारश्रीविग्रहबालभूषणविडम्बितवसन्तो

वदनहिमकरहासकरशिशिरदिगन्तो योगिजनध्येयो भवद्विधेयो भ्रातृसखिभिरनुगम्यमानो निरभिमानः सकललोकलोचनभिरामो रामो रमयंश्चक्षुष्मतः श्रीमतः पादमूलमुपसर्पति।

वसिष्ठः (सहसोत्थाय विस्फोरितनेत्रो विलोकयन्) अये !

अयं छविव्रीड़ित कोटिकामो निष्कामकामारिकृतप्रणामः ।

अशेषसंसारविपद्विरामो नेत्राभिरामः समुपैति रामः ।।१५।।

(आगे देख कर आश्चर्य से) देव ! देखिये, देखिये ! जिन्होंने श्रीलक्ष्मीजी के द्वारा पूजित पदपद्म के पवित्र परागरूप सिन्दूर से पृथ्वीरूप सौभाग्यवती के भालप्रान्त को सुशोभित किया है तथा जिनके सौन्दर्यसारसर्वस्व सुकोमल श्रीविग्रह पर विराजमान बालोचित आभूषणों से वसन्त भी लज्जित हो गया है एवं जिनके मुखचन्द्र के हास किरणों द्वारा समस्त दिशाप्रान्त शीतल हो रहे हैं ऐसे ये योगीजनों के लिये ध्येय आपश्री के सुयोग्य शिष्य अभिमान रहित, सममस्त लोकों क नेत्रों को आनन्द देने वाले श्रीराम, तीनों भ्राताओं एवं मित्रों द्वारा जिनका अनुगमन किया जा रहा है ऐसे वे राघव आपश्री के श्रीचरणों के निकट आ रहे हैं।

वसिष्ठ – (सहसा उठकर विस्फारितेनेत्रों से देखते हुए) अरे ! जिन्होंने अपने सौन्दर्य से कोटि कोटि कामदेवों को लज्जित किया है तथा कामनारहित होकर काम के शत्रु भगवान शंकर द्वारा जिनको प्रणाम किया गया है, ऐस समस्त संसार की विपत्तियों के विरामस्थान, नेत्रों को आनन्ददेनेवाले ये श्रीराम मेरे निकट आ रहे हैं ।।१५।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

अहो !

धन्यैषा किल कौसल्या यस्यां शुक्तावजायत ।
रामाभिधं जगच्छ्लाध्यं मुक्तानामपि मौक्तिकम् ।।१६।।

(तावदागत्य सानुजोरामः कुलपतिपदपद्मं प्रणमति)

वसिष्ठः - (सहर्षः सवाष्पनेत्रः)

जीवजीवनदातारश्चिरं जीवत बालकाः ।
भानवो जीवयन्तो वै राजीववानीव जीविनः ।।१७।।

अये ! दशरथ सुकृतः ! क्षीरसागर नवेन्दवः ! मत्तः समस्तशास्त्राणि समधिगम्य सर्वविद्याव्रतस्नाताः संवृत्ताः यूयमपूर्वया गुरुवृत्या च मां सन्तोषितवन्तः तदद्यसौभाग्यपेषलान् कोसलान् प्रेषयामि वः ।

(रामं आहूय क्रोडे कृत्वा मुखं चुम्बन्) वत्स राम ! सर्वज्ञमपि परमात्मानं त्वां आत्मनः शिष्यसम्बन्धपोषणधिया किंचिदुपदिशामि ।

अहो !

ये श्रीकौसल्या धन्य हैं, जिनके सीपी में समस्त संसार के लिये श्लाघनीय श्रीराम नामक मुक्त मुनिजनों का भी सर्वस्व मोती प्रकट हुआ ।।१६।।

(तब तक भ्राताओं सहित श्रीराम आकर कुलपति वसिष्ठजी के चरणकमलों में प्रणाम करते हैं)

वसिष्ठ – (प्रसन्नता से अश्रुपूर्ण नेत्र होकर) जीवों को जीवन देने वाले हे दशरथ राजकुमरो ! कमलकुल को जीवित करने वाले वसन्तकालिक सूर्य की भाँति समस्तप्राणियों को सुखमय जीवन दान देते हुए तुम लोग चिरजीवी रहो ।।१७।।

विशेष – भानवः यह शब्द सूर्यपक्ष में आदरार्थक बहुचनान्तक है एवं बालकों के पक्ष में चारों भ्राताओं के अभिप्राय से बहुवचन का सूचक है।

हे श्रीदशरथ के पुण्य ! क्षीर सागर के नवीन चन्द्रस्वरूप बालको ! तुम सब मुझसे समस्त शास्त्रों का अध्ययन करके सर्वविद्याव्रतस्नात हो चुके हो तथा तुमने अपूर्व गुरुसेवा से मुझे पूर्णतया सन्तुष्ट कर लिया इसलिये आज तुम सबको मैं सौभाग्यशाली कोसलनगर भेज रहा हूँ ।

(श्रीराम को बुलाकर गोद में बिठाकर मुख को चूमते हुए)

वत्स राम ! तुम सर्वज्ञ परमात्मा को भी अपने शिष्य सम्बन्ध के पोषण की दृष्टि से कुछ उपदेश दे रहा हूँ ।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas. All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

सत्यं सदा वद समाचर वेदधर्मम्,
स्वाध्यायतस्तनय मा प्रमदः कदापि।
गार्हस्थ्य धर्मनिरतो रमयंस्त्रिलोकीम्,
शोकं भुवः शमय भारतभाग्यभानो ।।१८।।

मातरि यथा पितरि स्वीयगुरौ तथैव,
आगन्तुके कुरु सदा शुचिदेवबुद्धिम् ।
त्रैलोक्यवन्दितयशश्शशिना स्ववंशम्,
तातं तथा दशरथं रमयस्व राम ।।१९।।

हे भारत भाग्यकाश के सूर्य पुत्र राम! निरन्तर सत्य बोलना, सदैव वैदिक धर्म का आचरण करना, स्वाध्याय अर्थात् वेदाध्ययन से कभी भी प्रमाद नहीं करना। गृहस्थ धर्म में निरत रहकर तीनों लोकों को आनन्दित करते हुए अतिशीघ्र पृथ्वी का समस्त भार हरण कर लेना ।।१८।।

हे राम ! माता पिता गुरुजनों एवं अतिथियों के प्रति सदैव देव बुद्धि रखो एवं त्रिलोकवन्दित यशश्चन्द्र द्वारा अपने पिता श्रीदशरथ को आह्लादित करते रहो ।।१९।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

(किमपि विचार्य मुखं ईषन्नमयित्वा संकोचमुद्रां नाटयन् शनैः) दक्षिणाः
इति कथयन् विरमति)

राम :- अलं संकोचेन कुलपते ! किमनया ह्यप्रभूतधनधान्यदक्षिणया, करतलीकृतसिद्धिजातस्य तत्रभगवतः ।

कामधेनुः सदा यस्य पुत्रीभूतैव वर्षति ।
लौकिकान् सकलान् कामान् तस्य दक्षिणया नु किम् ।।२०।।

अतो मन्ये कस्यैचिदपूर्वदक्षिणायै स्पृहयते मे कुलपतेर्मनः (भुजावुत्थाप्य प्रतिज्ञां नाटयन्) देव! प्रतिजानीते रघुकुलोद्भवो दाशरथिः कौसल्यानन्दनो रामः ।

विशेष – उक्त श्लोक में मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव इस श्रुति का भावानुवाद समझना चाहिये।

(कुछ विचारकर मुख को थोड़ा झुकाकर संकोचमुद्रा प्रदर्शित करते हुए धीरे से) दक्षिणा .... (ऐसा कहते कहते चुप हो जाते हैं)

श्रीराम – संकोच नहीं करना चाहिए । कुलपते । जिन्होंने समस्त सिद्धिसमूहों का हस्तगत कर लिया है ऐसे आप भगवान वसिष्ठ जी के लिये इस सामान्य धनधान्य की दक्षिणा से क्या प्रयोजन ?

जिनकी पुत्री बनकर साक्षात् कामधेनु ही सदैव समस्त लौकिक कामनाओं का वर्षण करती रहती है उनका इस सामान्य दक्षिणा से क्या प्रयोजन ? ।।२०।।

इससे मुझे लगता है कि किसी अपूर्व दक्षिणा के लिये मेरे कुलपति का मन स्पृहायुक्त हो रहा है।

श्रीराम –(भुजा उठाकर प्रतिज्ञा कर अभिनय करते हुए) देव ! रघुकुल में उत्पन्न दशरथ पुत्र कौसल्यानन्दन राम प्रतिज्ञा करता है

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

निहत्य सकुलं संख्ये रावणं निशितैः शरैः ।
भूभारक्षपणाख्येयं दास्यते गुरुदक्षिणा ।।२१।।

(नेपथ्ये) साधु ! साधु ! तपनकुलकेतो साधु ।

वसिष्ठः - कृतकृत्योऽस्मि

शीलेन गुरुवृत्या च तोषयित्वां गुरुं प्रभो ।
अधीतविद्यो लब्धार्थो गच्छायोध्यां रघूत्तम ।। २२।।

(रामः सानुजः प्रणम्य निष्क्रामति)

।। इति प्रथमदृश्यम्।।

अपने तीक्ष्ण बाणों से युद्ध में सबन्धुबान्धव रावण का वध करके पृथ्वी का भार उतारकर आपको गुरुदक्षिणा समर्पित करूँगा ।। २१।।

(नेपथ्य में अर्थात् परदे के पीछे से)

बहुत अच्छा, सूर्यकुल के श्रीराम ! बहुत अच्छा ।

वसिष्ठ – मैं कृतकृत्य हुआ ।

हे प्रभो !

शील और महान व्यवहार से मुझ गुरु को सन्तुष्ट करके, विद्याध्ययन कर, अभीष्ट प्राप्त कर हे रघुवंशश्रेष्ठ ! अयोध्या का जाओ ।।२२।।

(श्रीराम भाइयों सहित प्रणाम कर निकल जाते हैं।)

प्रथम दृश्य समाप्त

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

द्वितीयदृश्यम्

(अथोपतिष्ठते हवनीयसामग्रीसहितः विश्वामित्रः शिष्याश्च)

शिष्याः - (त्वरमाणाः निषेधमुद्रां नाटयन्तः) न प्रवेष्टव्यं न प्रवेष्टव्यम् अग्न्यगारं श्रीचरणैः ।

विश्वामित्रः - (पृष्ठे निरीक्ष्य) कथमिव ।

शिष्याः - (कृताञ्जलयः देव ! विहतोऽयं तत्रभवतो यागः विहतोऽयम् ।

विश्वामित्रः - (सोद्वेगम्) अरे, परमपावनतपनविध्वंस्ताविद्यानीहारे वसिष्ठ सुतशतशतपत्रकाननतुषारे, नवीनसर्गरचनाविदग्धे मयि कौशिके, को नाम. नराधमः कृतापराधः आत्मानमगाधे विपदर्णवे निर्मिमज्जयिषति ।

द्वितीय दृश्य

(अनन्तर हवनीय सामाग्री के सहित विश्वामित्र तथा उसके शिष्य उपस्थित होते हैं)

शिष्यगण – (शीघ्रता करते हुए और मना करते हुए) आप अग्निशाला में प्रवेश न करें, प्रवेश न करें ।

विश्वामित्र– (पीछे देखते हुए) किसलिये ?

शिष्यगण– (हाथ जोड़कर) देव! आपका यज्ञ नष्ट हो गया, नष्ट हो गया ।

विश्वामित्र – (उद्वेगपूर्वक) अरे परमपावन तपस्यारूप सूर्य से जिसने अविद्यारूप कोहरे को नष्ट कर दिया है ऐसे, वसिष्ठजी के शत शत पुत्रों के कमलवन के लिये पाले के समान, नवीन सृष्टि रचना में निपुण मुझ विश्वामित्र के प्रति अपराध करके कौन नराधम स्वयं को अगाध विपत्ति महासागर में निमग्न करना चाहता है।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

यस्यैव विक्षोभणरोषवह्नौ वसिष्ठपुत्रा शलभा बभुवुः ।

तं न्यस्तदण्डं तपसा प्रचण्डं मां कोऽवजानाति हि गाधिसूनुम् ।।१।।

शिष्याः - (नतकन्धराः) कुलपते। श्रूयते खलु पौलस्त्यवंशदावानलः शिवविरञ्चिवरदानमहाबलः प्रकृतिखलो लोकरावणो रावणः । स किल भुजबल विजितसकललोकपालः, वैदिकधर्म समूलमुच्छेत्तुं प्रयतमानः समस्तान् श्रौतस्मार्तयागान् विजिघांसति।

तेनैव प्रेषिताभ्याम् अयुतनागबलसम्पन्नताटका पुरोगमाभ्याम् महाबाहुभ्यां, मारीचसुबाहुम्यां तत्रभवतो यागो बहुशो विहन्यते। तौ मायाविमुकुटममणीनिशाचरौ मांसरुधिरौघैः समभिवर्षन्तौ यज्ञवेदीं विदूषयन्तः खादतश्च यज्वनः।

जिसकी उद्दीप्ति क्रोधाग्नि में वसिष्ठ के सौ सौ पुत्र पतंगे के समान भस्मसात् हो गये हों, ऐसे दण्डविधान से मुक्त, तपस्या से परमप्रचण्ड मुझ गाधिसूनु विश्वामित्र का कौन अपमान कर रहा है? ।।१।।

शिष्यगण – (सिर झुकाकर) हे कुलपति! सुना जाता हैकि पुलस्त्यवंशरूप वेणुवन को जलाने के लिये दावानल, भगवान शंकर व ब्रह्मा के वरदान से महाबलशाली हो चुका है ऐसा लोक को रुलाने वाला रावण स्वभाव से ही खल है। वह अपने भुजबल से समस्त लोकपालों को जीतकर वैदिक धर्म को समूल नष्ट करने के लिये प्रयत्न करता हुआ, समस्त वैदिक तथा स्मृतिप्रोक्त यज्ञों को विनष्ट करना चाहता है।

उसी के द्वारा प्रेषित तथ दशसहस्र हाथियों के बल के सम्पन्न, ताड़का को अग्रसर किये हुए, महाबाहु मारीच सुबाहु नामक राक्षसों द्वारा आपश्री का यज्ञ बार बार नष्ट कर दिया जाता है। वे मायावियों के मुकुटमणि दोनों राक्षस यज्ञवेदिका पर माँस एवं रक्त की वर्षा करते हुए यज्ञस्थल को दूषित कर डालते हैं तथा याज्ञिकों को खा जाते हैं।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

विश्वामित्रः - (शोकमुद्रायाम) हन्त!

अत्याहितं अत्याहितम् ।

यज्ञा वैदिकधर्मस्य कर्मसन्तानहेतवः ।

तेऽसुरैर्यदि हन्यन्ते धर्मः कं शरणं व्रजेत् ।।२।।

अत्र मया किं प्रतिकर्तव्यम्?

किं शापतीव्रतरवाडवभीमवेग, ज्वालावलीक्षुरितचण्डकृशानुनाहम् ।।

भस्मीकरोमि रजनीचरचीर्यसिन्धुं, हा हा हता खलु पुरा विमला क्षमा मे ।।३।।

अथवा, नेदमुचितम् न्यस्तदण्डेषु मुनिषु,

अविचारक्रियारम्भा खिद्यन्ते भूरिविप्लवाः ।

यथा महार्णवे भूरि सीदन्ति विगतप्लवाः ।।४।।

विश्वामित्र– (शोक की मुद्रा में) अहो ! बड़ा अनर्थ हुआ, बड़ा अनर्थ हुआ। यज्ञ ही वैदिक धर्म के कर्मविस्तार के मूलकारण हैं यदि वे ही असुरों द्वारा नष्ट किये जा रहे हैं तो धर्म अब किसकी शरण में जाए ।।२।।

इस विषय में मुझे क्या प्रतिक्रिया करनी चाहिए ? क्या अपने शापरूप अत्यन्त तीव्र वाड़वाग्नि के भयंकर वेग की ज्वाला से उद्दीप्त प्रचण्ड क्रोधाग्नि द्वारा राक्षसों के पराक्रमरूप समुद्र को भस्म कर दूँ। किन्तु ऐसा करने पर तो मेरी पूर्वकाल में समर्जित विमल क्षमाशक्ति ही नष्ट हो जायेगी। अथवा, दण्डविधान की प्रक्रिया से मुक्त मुनियों के लिये यह कार्य उचित नहीं है।

विचार किये बिना कार्य का प्रारम्भ करने वाले उसी प्रकार भयंकर संकटों में पड़कर कष्ट पाते रहते हैं जिस प्रकार महासमुद्र में बिना जहाज के असहाय पंथिक डूब जाते हैं। ।।४।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.

http://www.jagadgururambhadracharya.org/

(किमपि विचार्य) हन्त ! ज्ञातम !

एषां दण्डधरो नूनं रामो राजीवलोचनः।

जज्ञे कौसल्यया साक्षाद् भगवान् भूतभावनः ।।५।।

तमेव सर्वलोकशरण्यं कोसलेन्दुं शरणं व्रजामि।

अये! अनाहूतो विमानितो भवेयम्? न खलु न खलु, ब्रह्मण्यदेवः किल दिनकरान्वयः।

(स्वगतम्) गीतम्

अद्य गत्वा मया चारु कोसलपुरीम्,

रामचन्द्राननेन्दोः सुधा पीयताम्।

अद्य दृष्ट्वा तुरीयं लसच्चातुरीम्,

तत्र सर्वा समस्या समाधीयताम् ।।१।।

(कुछ विचार करके) अरे, जान लिया इनको दण्ड देने के लिये ही कौसल्याजी को माध्यम बनाकर साक्षात् भूतभावन कमललोचन भगवान राम अवतीर्ण हो चुके हैं। ।।५।।

सम्पूर्ण लोकों को शरण देने में समर्थ उन्हीं कोसलचन्द्र श्रीराम की शरण में जा रहा हूँ। अरे, बिना बुलाये जाकर कहीं अपमानित तो नहीं हो जाऊँगा? नहीं, नहीं, सूर्यवंश ब्राह्मणों में देवबुद्धि रखता है।

(अपने मन में)

आज जाकर मनोहर श्रीकोसलपुरी,

राम विधुमुख शशी की सुधा पी लूँ मैं।

आज चातुर्यमण्डित निरख तूर्य को,

अपनी सारी समस्या को हल कर लूँ ।।१।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

सुप्रभात निशा मेद्य मंगलदिशा,
प्रेरितोऽहं शकुनसूचि दक्षिणदृशा,
चारुलोचनचकोरेण वै सादरम्
कोमलः कोसलेन्दुः समाश्रीयताम् ।।२।।
विश्वामित्रोऽपि मित्रं परं प्राणिनाम्,
भक्तकञ्जैक मित्रं समासाद्य भो,
स्वाभिमानं विहायैव राघवकरे,
मुक्तिमूल्यं विनैवाद्य विक्रीयताम् ।।३।।

सुप्रभाता निशा मेरी मंगल दिशा,
प्रेरणा है शकुन सूची दक्षिण दृशा।
चारु लोचन चकोरों से आदर सहित,
राम कोसल सुधाकर को वश कर लूँ मैं ।।२।।
मित्र जग का विश्वामित्र होकर के मैं,
भक्त कुल कंज रवि राम को प्राप्त कर,
तज के अभिमान बिन मुक्ति के मोल अब,
आज विक्रीय रघुनाथ कर हो लूँ मैं ।।३।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

याचकोऽहं हरिश्चन्द्र पुरतः पुरा,
रामचन्द्रं तथैवाद्य याचे सुखम्।
प्रार्थ्यमान्यं बदान्यं नृपं दशरथं
रामरत्नं मनः सम्पुटे धीयताम् ।।४।।
अद्य यास्याम्ययोध्यां भवन्याजकः
ब्रह्म साक्षात् करिष्ये परिव्राजकः ।
यज्ञरक्षामिषेणाद्य लक्ष्मणयुतः,
स्वाश्रमं रामभद्रः समानीयताम् ।।५।।

मैं था याचक हरिश्चन्द्र का पूर्व में,
आज रघुचन्द्र को सुख से मांगूँ अहो।
लेके दशरथ सरीखे महादानी से,
मन के सम्पुट में प्रभुरत्न को धर लूँ मैं ।।४।।
आज याज्ञिक हो कोसल को जाऊँगा मैं,
धर यती वेश प्रभु को निहारूँगा मैं,
यज्ञरक्षा के मिस से अनुज के सहित,
अपने आश्रम का रघुवर अतिथि कर लूँ मैं ।।५।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

(प्रकाशम् शिष्याभिमुखः)

भो-भो सिद्धाश्रमवासिनः, बटवः महात्मानः, साधकाः, मौनशीलामनुयः यावन्मदागमं प्रलिपाल्यतां सिद्धाश्रमः।

अहं तावद् गमिष्यामि कोसलान् कोसलेश्वरम् ।
याचित्वा यज्ञरक्षार्थमानेष्यामि च राघवम् ।।६।।

(इति निष्क्रान्तः)

इति द्वितीयदृश्यम्

(स्पष्ट शिष्यों की ओर मुख करके)

हे सिद्धाश्रम के निवासी बटुओ, महात्मा, साधकगण, मौनशील मुनियो! जब तक अयोध्या से मैं वापिस नहीं लौटता तब तक तुम सब सिद्धाश्रम की रक्षा करो।

मैं तब तक अयोध्या जा रहा हूँ और यज्ञरक्षा के लिये कोसलपति श्रीदशरथ से माँगकर श्रीराघव को ला रहा हूँ ।।६।।

(ऐसा कह कर चले जाते हैं)

द्वितीय दृश्य समाप्त

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

तृतीयदृश्यम्

(अथोपतिष्ठते अमात्यपरिवृतः सभायां विराजमानो महाराजो दशरथः)

प्रतीहारः- (आगत्य, प्रणम्य) विजयतांदिनकरकुलकेतुः विजयताम् ।

दशरथः- कथय, किमिव ससंभ्रमं ते मनः ?

प्रतीहारः - (सोल्लासम्) देव ! एष वे कौसलयानन्दवर्धनः सहानुजः नातिदीर्घकालेन समधीतसकलशास्त्रः गुरुकुलात् प्रत्यागतः श्रीमत्पदकमलरेणुभिः स्वमलंचिकीर्षति ।

दशरथः (सानन्दम्) आनीयताम् मे नयनचातकजलधरो राघवः समानीयताम् ।

तृतीय दृश्य

(अनन्तर राजसभा में विराजमान महाराज दशरथ मन्त्रियों सहित उपस्थित होते हैं)

प्रतीहार– (आकर प्रणाम करके) विजय हो, सूर्यकुल के केतु महाराज की जय हो ।

दशरथ –कहो, तुम्हारा मन इस प्रकार उत्कण्ठापूर्ण क्यों है ?

प्रतीहार – (उल्लास पूर्वक) हे देव! ये कौसल्यानन्दवर्धन श्रीराम अपने अनुजों के साथ अल्पसमय में ही समस्त शास्त्रों को अध्ययन करके गुरुकुल से लौटकर आपके चरणकमल की रज से अपने को अलंकृत करना चाह रहे है।

दशरथ– (आनन्दपूर्वक) मेरे नेत्रचातक के लिये नवीन मेघ स्वरूप श्रीराम को ले आओ, ले आओ ।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

प्रतीहारः- यथाज्ञापयति चक्रवर्ती ।

(निष्क्रम्य तथा करोति)

दशरथ- (आयान्तं सहानुजं रामं दूरात् समवलोक्य त्यक्तासनः उत्थाय)

आयाहि भो सजलनीरदकम्रकान्ते
चेतश्चकोरकविधो विधुतुल्यधामन् ।
लोकाभिराम रविवंश सरोज भानो
मत्प्राणरक्षक सुजीवन रामभद्र ।।१।।

(रामः आगत्य सहानुजः प्रणमति)

दशरथः - (परिष्वज्य मुखारविन्दं चुम्बन् सगद्‌गदम्) कथय कमल लोचन ! गुरुकुले निवसता त्वया सहानुजेन वयं कदापि स्मृतिपथं नीताः ? वत्स ! तव मुखारविन्ददर्शनमन्तरेण जगदिव शून्यं प्रतीयते तव वृद्धपितुः। सर्वतोऽधिकं समुत्कण्ठते त्वामपश्यन्ती अर्भकवत्सला कैकयराजतनया ।

प्रतीहार– जैसी चक्रवर्ती जी की आज्ञा । (जाकर वैसा करता है)

दशरथ– (अपने अनुजों के सहित राम को आते हुए दूर से देखकर आसन से उठकर) सजल मेघ के समान कान्तिवाले चित्तरूप चकोर के चन्द्रमा तथा विधु अर्थात् श्रीवत्सलाञ्छन विष्णु के समान तेजस्वी, लोकाभिराम, सूर्यवंश रूप कमल के सूर्य तथा मेरे प्राणरक्षक संजीवन हे रामभद्र ! आओ ।।१।।

दशरथ (हृदय से लगाकर मुखारविन्द चूमते हुए गद्‌गद स्वर में) कमललोचन राघव! क्या गुरुकुल में भाइयों सहित निवास करते हुए हम कभी तुम्हारे स्मृति पथ में आते थे? बेटे तुम्हारे मुखारविन्द के दर्शन बिना तुम्हारे वृद्धपिता को यह सम्पूर्ण संसार शून्य सा प्रतीत होता है। तुम्हें न देखकर सबसे अधिक पुत्रवत्सला कैकेयी उत्कण्ठित होती है।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

यावद्गतो गुरुकुलं हि सहानुजस्त्वम्,

लोकानुगः समधिगन्तुमशेषशास्त्रम् ।

तावत् सवाष्पनयना शिशुवत्सला सा,

स्वप्नेऽपि कं न लभते तव मध्यमाम्बा ।।२।।

रामः - (ईषद् भावुकमुद्रायाम्) समनुगृहीतोऽस्मि । यदि मां मध्यमाम्बा एव मेव स्मरति (तन्ममध्ये रामं दशरथञ्च निरीक्ष्य सभक्तिभावः चारणः गायति)

हे राघव ! लोक मर्यादा को अनुगमन करते हुए सम्पूर्ण शास्त्रों का अध्ययन करने के लिए जग से तुम अनुजों सहित गुरुकुल गये हो, तभी से अश्रुपूर्णनेत्र तुम्हारी मझली माँ स्वप्न में भी सुखा प्राप्त नहीं कर पायी ।।२।।

राम – (थोड़ी सी भावुक मुद्रा में) मैं अनुगृहीत हुआ, यदि मेरी मध्यमाम्बा इस प्रकार मुझे स्मरण करती है। इस बीच श्रीराम एवं दशरथ जी को निहार कर भक्ति भाव पूर्वक चारण गीत गाता है–

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas. All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

गीतम्

जय नरलोकललाम सजलधन, तनु सुषमा मन्मथमदहारिन् ।

कौसल्यासुशुक्तिमौक्तिकवर, दशरथसुकृतपयोधिसुधाकर ।

सुजन चारुसारङ्ग मधुपवर रवि रविकुलसरोजसुखकारिन् ।।१।।

जय मानव मानवताभूषण जय नरवर रघुवंशविभूषण ।

भूमि भारमपहर रणभीषण खलकुलकदन शरासन धारिन् ।।२।।

करुणावरुणालय धृतलाघव मर्यादा पुरुषोत्तम राघव ।

परबह्म सुजने सुमुखो भव रामभद्रजनमनोविहारिन् ।।३।।

सर्वे सभारदाः (समवेतस्वरेण) साधु, साधु ! साधु समुद्गीतम् ।

गीत

जय नरलोक ललाम सजलघन, तनु सुषमा मन्मथमदहारी ।

कौसल्या सुशुक्ति मौक्तिकवर, दशरथ सुकृत पयोधि सुधाकर।

सुमन चारु सारंग मधुपवर, रवि रविकुल सरोज सुखकारी।।१।।

जय मानवमानवताभूषण, जय नरवर रघुवंश विभूषण ।

भूमि भार हर लो रणभीषण, खलकुल कदन शरासन धारी ।।२।।

कारुणा वरुणालय धृतलाघव, मर्यादा पुरुषोततम राघव ।

परबह्म हो प्रसन्न अब रामभद्र जनमनोविहारी ।।३।।

सभी सभासद (सामूहिक स्वर में) बहुत सुन्दर बहुत सुन्दर गाया ।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

दशरथः- पुत्रा सुचिरंप्रेषितान् युष्मान् दिदृक्षवो युष्मन्मातरः समुत्कण्ठन्ते तद्गच्छत त्वरमाणाः तासां सविधे।

सर्वेकुमाराः - एवमेव (इति गच्छन्ति)

(एतदन्तरे धावन् भयविकलवगिरा सूचयति प्रतीहारः) जयतु महाराजः ! एष वै वसिष्ठपुत्रशतशतपत्रशीतांशुः हरिश्चन्द्रसुख कुमुदविपिनचण्डांशुः प्रचण्डतपाः गाधिनन्दनः कौशिकः राजद्वारे चक्रवर्तिनं प्रतीक्षमाणो निजागमनेन श्रीचरणं विज्ञापयति । तत्र देवः प्रमाणम् । यतोहि

राज्ञां स्त्रीणाञ्च बालानां दैवस्य च चिकीर्षितम् ।
धातापि नार्हति ज्ञातुं के वयं मूढमानसाः ।।३।।

दशरथः -(सकुतूहलम्) अये! आकस्मिकीयं समुपस्थितिर्गाधिनन्दनस्य।

दशरथ – पुत्रो ! बहुत लम्बे समय से तुम दूर रहे, तुम्हें देखने की इच्छावासी तुम्हारी माताएँ उत्कण्ठित हैं। अतः शीघ्र ही उनके पास जाओ।

सभी कुमार – अच्छा ठीक है । (सभी जाते हैं।)

(उसके अनन्तर दौड़ता हुआ भय से व्याकुल वाणी में प्रतीहार सूचना देता है।

महाराज की जय हो ! ये वसिष्ठपुत्ररूप कमलवन के चन्द्रमा हरिश्चन्द्र के सुखकुमुद को नष्ट करने में सूर्य, प्रचण्ड तपस्वी, गाधिनन्दन विश्वामित्र राजद्वार पर आपकी प्रतीक्षा करते हुए, अपने आगमन से श्रीचरणों को अवगत करा रहे हैं। आगे जेसी आपकी इच्छा। क्योंकि –

राजा, स्त्री बालक एवं ईश्वर की चेष्टा को विधाता भी नहीं जान सकते फिर हम जैसे साधारण बुद्धिवालों की क्या गणना? ।।३।। –

दशरथ – (कुतूहलपूर्वक)

अरे! एकाएक सहसा विश्वामित्र का आगमन ?

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

वसिष्ठः - अलम् अलम् समधिकविचारणाभिर्नरेन्द्र ।

अस्मत्पुरोगमेन त्वया सभाजनीयोऽयं गायत्रीमन्त्रदृष्टा तपस्विमुकुटमणिर्ब्रह्मर्षि :-

यथाकथंचिदायातः साधुश्चरति मङ्गलम् ।

वक्रोऽपि चन्द्रमायाति ललाटे धूर्जटेर्ध्रुवम् ।।४।।

तदलम् विलम्बेन, चलामरस्तत्र । (इति सर्वे द्वाराभिमुखाः गच्छन्ति)

विश्वामित्रः - (दशरथसहितं वसिष्ठं विलोक्य)

प्रणमामि क्षमैकमूर्ति ब्रह्मर्षिशिखामणिं वसिष्ठम्।

वसिष्ठः- सफलमनोरथो भव गाधिनन्दन ।

सुस्वागतं व्याहरामः । एष वै हंसवंशावतंसः पुरहूतसखः सामात्यश्चक्रवर्तिदशरथः तत्रभवन्तं समभिवन्दते।

वसिष्ठ – हे राजन् । अधिक विचार करना ठीक नहीं । आप हम लोगों को अग्रसर करके गायत्री मन्त्र के दृष्टा तपस्वीशिरोमणि श्रीविश्वामित्र का स्वागत करें। क्योंकि किसी भी प्रकार आये हुए महात्मा मंगल की करते हैं। जिस प्रकार वक्र चन्द्रमा भी भगवान शंकर के मस्तक की शोभा को बढ़ाता है। इसलिए विलम्ब न करके हम लोग विश्वामित्र के स्वागत के लिए चलें।

(सब लोक द्वार के सामने जाते हैं)

विश्वामित्र –(दशरथ सहित वसिष्ठ को देखकर) क्षमा की मूर्ति ब्रह्मर्षियों के शिरोमणि वसिष्ठ जी को मै प्रणाम करता हूँ।

वसिष्ठ– हे गाधिपुत्र ! आपका मनोरथ सफल हो । हम आपका स्वागत करते हैं। ये सूर्यकूल भूषण इन्द्र के सखा, चक्रवर्ती राजा दशरथ अपने मन्त्रियों सहित आपको वन्दन कर रहे हैं।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

विश्वामित्रः- (चरणयोः पतितं दशरथं भुजाभ्यां समुत्थाय) **शुभाशीराशयः सन्तु ! भागरीरथरथ वर्त्मशीलवर्मन !**

भगीरथेन वै गंगा समानायि महीतले ।

त्वया तु तत्पिता साक्षात् रामभद्रः समाहृतः ।।५।।

दशरथः- (शिरो नमयित्वा) **अनुगृहीतोऽस्मि।**

वसिष्ठः - तदधुना गायत्रीदर्शनप्रथितशीलः सुशीलकौशिकचरणपंकजरेणुभिः सनाथीभवतु अयोध्याराजपरिषत् ।

सर्वे आगच्छन्ति सभाजितो विश्वामित्रः स्वलक्ष्यैकदृष्टिः इतस्ततः विलोकयन्)

विश्वामित्र (चरणों में पड़े हुए दशरथ जी को भुजाओं से उठाकर) अनेक आशीर्वाद । हे भगीरथ के रथ के मार्ग का अनुगमन करने वाले महाराज !

भगीरथ तो पृथ्वी पर गंगा जी को लाये किन्तु अपने तो उन गंगा के पिता महाविष्णु श्री रामचन्द्र को ही प्रकट कर लिया ।।५।।

दशरथ – (सिर झुकाकर) मैं अनुगृहीत हूँ ।

वसिष्ठ– तो अब गायत्री के साक्षात्कार से प्रसिद्ध चरित्र सम्पन्न सुशील महर्षि विश्वामित्र के चरणकमलों की धूलि से अयोध्या की राजसभा सनाथ हो। (सभी आते हैं)

(सम्मानित विश्वामित्र अपने लक्ष्य पर दृष्टि रखकर इधर उधर देखते हुए)

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas. All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

(स्वगतम्) अये !

सभाजितोऽहं विविधोपचारैः, राज्ञा वसिष्ठेन समागतोऽपि ।

परं न पश्यामि तमालनीलम्, स्वमीश्वरं कोसलराजसूनुम् ।।७।।

भवतु, चिरप्रतीक्षापि सुखाय कल्पते । (नेपथ्ये) अपसरत, अपसरत, सावधान भवत ! इयं वै कोसलेन्द्रराजमहिषी राममाता कैकेयीसुमित्राभ्यामनुगम्यमानाचतुःपुत्रपुरागमा देवीकौसल्या गाधिनन्दनं समभिवादयितुमुपतिष्ठते।

(सभासदाः सतर्काः)

(तावत् कौसल्या समागत्य विनीतमुद्रया विश्वामित्रं प्रणमन्ती)

(अपने मन में) अरे !

मैं महाराज दशरथ के द्वारा अनेक राजकीय उपचारों से सम्मानित हुआ और वसिष्ठ जी से मिला भी, परन्तु तमालवृक्ष के समान नीले अपने आराध्य कोसलराजपुत्र श्रीराम को नहीं देख रहा हूँ ! ।।६।।

लम्बी प्रतीक्षा भी सुखद ही होती है। (नेपथ्य में)

दूर हटें, दूर हटें ! सावधान हो जायें। ये कोसलेन्द्र दशरथ की राजमहिषी, श्रीराम की माता देवी कौसल्या, कैकेयी एवं सुमित्रा के साथ चारों पुत्रों को आगे करके गाधिनन्दन श्रीविश्वामित्र को प्रणाम करने उपस्थित हो रही हैं। (सभासद सतर्क हो जाते हैं)

(तब तक कौसल्या जी विनीत मुद्रा में प्रणाम करती हुई)

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.

http://www.jagadgururambhadracharya.org/

कौसल्या- नमो ब्रह्मर्षिवर्याय विश्वामित्रायधीमते ।

यत् कृपायाः प्रसादेन स्वस्तिमान् राघवान्वयः ।।७।।

विश्वामित्रः - (आशीर्वादामुद्रां नाटयन्) वर्धस्व कोसलेन्द्र पट्टमहिषि ! सौभाग्यसमलंकृता चिरञ्जीवपुत्रा भव। महाराज्ञि त्वादृशीभाग्यभाजनभूता का नाम नारी भुवनत्रये।

तवेयं कौसल्ये ! जगति किल कुक्षिर्बहुमता,
शची तस्यै नित्यं स्पृहयति समुत्कण्ठितमनाः।
समुद्भूतं यस्यां श्रुतिगणसमुद्गीतचरितम्,
मुनीनां दुर्दर्श शिशुतनु परब्रह्म लसति।।८।।

किं बहुना ?

यथादितिः सुरेन्द्रेण विनता च गरुत्मता ।
तथा त्वमपि रामेण कौसल्ये सुखमेधसे ।।६।।

कौसल्या – जिनके कृपाप्रसाद से रघुकुल स्वस्ति ललाम।
उन कौशिक ब्रह्मर्षि को बारंबार प्रणाम ।।७।।

विश्वामित्र– (आशीर्वाद मुद्रा का अभिनय करते हुए)

बधाई हो दशरथराज महिषी ! महारानी ! चिरंजीवी पुत्रों के साथ सौभाग्यवती रहो। आप जैसी भाग्यशालिनी तीनों लोकों में कौन है?

हे कौसल्ये ! वास्तव में आपकी ही कोख में त्रिलोक में बुत सम्मानित हुई है। इसके लिए तो निरन्तर इन्द्राणी भी स्पृहा करती रहती है। क्योंकि श्रुतिगणों द्वारा जिनका चरित्र गाया गया है तथा मुनियों को भी जिनके दर्शन दर्लभ हैं ऐसे परब्रह्म परमेश्वर बालरूप में जिस कोश में प्रकट होकर सुशोभित हो रहे हैं उसकी स्पृहा स्वाभाविक ही है।।८।।

अधिक क्या कहूँ । जिस प्रकार देवमाता अदिति इन्द्र से तथा माता विनता गरुड़देव से समद्धिशालिनी बनी उसी प्रकार महारानी कौसल्या आप भी श्रीराम के कारण सुख एवं समृद्धि से सम्पन्न हो रही है। ।।६।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas. All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

(अनन्तरं कैकयी प्रणमन्ती)

वन्दे वन्दारु वृन्दानां पारिजातं महामतिम् ।
मुनीनां पुण्यपादाब्जं गाधेयं जपतां वरम् ।।१०।।

विश्वामित्रः - स्वस्ति ते व्याहरामि ।

सुतं प्रसूय भरतं त्वया कैकयनन्दिनि ।
लोकत्रयं धवलितं प्राच्या चन्द्रमसं यथा।। ११।।

(अथ वन्दमाना सुमित्रा)

नमामि तपतां श्रेष्ठं गाधिवंशदिवाकरम् ।
दिवाकरकुलायास्मै स्वस्तये भव सुव्रत ।।१२।।

विश्वामित्रः- यशस्विनी भव ! चारुचरित्रे सुमित्रे !

पुत्रौ लक्ष्मणशत्रुघ्नौ सुमित्रे जनितौ त्वया ।
विवेकविनयौ ब्रह्मविद्ययेवानवद्यया ।।१३।।

(इसके पश्चतात् कैकेयी प्रणाम करती हुई)

वन्दन करने वालों के लिए कल्पवृक्ष, महामति, मुनियो के भी पूज्यचरण, जप करने वालों में श्रेष्ठ गाधिनन्दन को मैं प्रणाम करती हूँ।।१०।।

विश्वामित्र– आपका कल्याण हो। हे कैकेयीनन्दिनी पूर्वदिशा द्वारा चन्द्रमा की भाँति आप द्वारा भरत को जन्म देकर तीनों लोक प्रकाशित कर दि गये हैं ।।११।।

(पश्चात् सुमित्रा प्रणाम करती हुई)

तपस्वियों में श्रेष्ठ, गाधिवंश के सूर्य श्री विश्वामित्र को मैं प्रणाम करती हूँ ।।१२।।

विश्वामित्र– सुन्दर चरित्रवाली सुमित्रे ! यशस्विनी होओ। अनिन्दित ब्रह्मविद्या द्वारा विवेक एवं विनय की भाँति ही आपके द्वारा लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न जैसे पुत्र प्रकट किये गये हैं। ।।१३।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

(अथ प्रणाममुद्रायां सानुजो रामः)

रामः - नवीनसृष्टिकर्तारं तपः स्वाध्यायतत्परम् ।
नमामि कौशिकं मूर्ध्ना रामो दाशरथिर्मुहुः ।।१४।।

विश्वामित्रः- (वन्दमानम् समुत्थाय)

जय रविकुलकेतो प्रोल्लसद्धर्मसेतो
मुनिजनसुखहेतो धूमकेतौ खलानाम् ।
रिपुतिमिरमुदस्य प्रातरर्को यथात्वम्
जनजलजविकासिन् स्वस्ति ते रामभद्र ।।१५।।

(अनन्तरं भरतलक्ष्मणशत्रुघ्नाः प्रणमन्तः)

यस्य दीप्तेन तपसा वासवोऽप्यास्तविस्मितः ।
कौशिकं तं नुमो भक्त्या वयं रामानुजास्त्रयः ।।१६।।

(अनन्तर प्रणाम मुद्रा में भाइयों सहित श्री राम)

राम– नवीन सृष्टि कर्ता तप एवं स्वध्याय में तत्पर, विश्वामित्र जी को मैं दशरथपुत्रराम शिरसा प्रणाम करता हूँ ।।१४।।

विश्वामित्र– (वन्दन करते हुए श्रीराम को उठाकर)

धर्मसेतु को सुशोभित करनेवाले मुनियों के सुख के हेतु दुष्टों के विनाशार्थ धूमकेतु (पुच्छलतारारूप) हे सूर्यवंश के केतु ! आपकी जय हो

प्रातःकालीन सूर्य की भाँति आप शत्रुरूप अन्धकार को समाप्त करके भक्तजनरूप कमल को विकसित करनेवाले बनें । आपका कल्याण हो। ।। १५ ।।

(इसके बाद भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न प्रणाम करते हैं)

जिनकी उग्र तपस्या से इन्द्र भी विस्मित हो गये थे ऐसे आप विश्वामित्र को हम श्रीराम के तीनों अनुज प्रणाम करते हैं ।।१६।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

विश्वामित्रः- स्वस्ति युष्मभ्यम् । परिचरन्तो मर्यादापुरुषोत्तमं लोकलोचनाभिरामं रामं शाश्वतीसमाः शुभ्रयशो लभध्वं पुत्रकाः ।

(भूयो रामं नखशिखक्रमेण निपुणं निरीक्ष्य)

अहो ! सकललोकलावण्यलक्ष्मीः शीलयन्तीव भाति शीलनिधिमिमं कौसल्यानन्छनम् । अये! यस्य मे नेत्राभ्यां पुरा वर्षन्ति स्म पावकस्फुलिंगाः ते एवं अद्य रामभद्ररूपमाधुरीमहोदधिमग्नमीनाविव प्रतीयेते अरे ! क्व गतो मे पुरन्दरधैर्यलोपिक्रोधः ? ब्रह्मनन्दसमुद्रमग्नचेतसोऽपि किमियं विचित्रावस्था ?

(पुनः पुनः विलोकयन् हषातिरेकेण गायति)

विश्वामित्र-- आपका कल्याण हो

हे पुत्रौ ! मर्यादा पुरुषोत्तम लोकलोचनभिराम शाश्वत राम के साथ रहते हुए उज्ज्वल यश को प्राप्त करो

(फिर से राम को नख से शिख तक सावधानी से देखकर)

अहो सम्पूर्ण लोकों की सौन्दर्यशोभा, शीलनिधान कौसल्यानन्दन श्रीराम की सेवा करती हुई सी प्रतीत हो रही है। अरे ! पहले जिस (मुझ) विश्वामित्र के नेत्रों से अंगार बरसते थे आज वे ही नेत्र श्रीरामभद्र के रूप माधुर्य के महासागर में मग्न मछली की भाँति प्रतीत हो रहे हैं

अरे ! इन्द्र के धैर्य को नष्ट करने वाला मेरा क्रोध कहाँ गया ?

ब्रह्मानन्द समुद्र में मग्न चित्त की यह कैसी विचित्र अवस्था? (बार बार देखते हुए हर्षातिरेक से गा उठते हैं)

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas. All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

गीतम्

मनसि मम वसतु सदा श्री रामः ।

निखिललोकलावण्यलालितः व्रीडितशतशतकामः ।।

रुचिररसेन्द्रसरोवरजातं, मसृणमृदुलनवमिव जलजातम्

परममधुर सौन्दर्य विभातं रूपं दधदभिरामः ।।१।।

तरुणतमालजलदसमशोभः, परमहंसमानसकृतलोभः ।

विगलितसुजनमनोविक्षोभः, भवभयविपद्विरामः ।।२।।

हरतु हरिर्मम भवपरितापं, शमयतु शत्रुजनितसन्तापम्

वितरतु दिशिदिशि कीर्तिकलापं, क्षपितदुरितपरिणामः ।।३।।

पातु मखं हतरिपुकुलयूथः, रणहृतनिशिचरगर्ववरूथः

भवतु शम्भुकार्मुकखण्डनपर सीताललितललामः ।।४।।

हमारे मन बसें सदा श्रीराम ।

सकल लोकलावण्यसुलालित, लज्जित शत शत काम ।

रुचिर श्रृंगारसरोवरसम्भव कोमल मृदुल सजल घन नव नव।

परममधुर सुन्दरता अभिनव, रूप धरे अभिराम ।।१।।

तरुणतमाल जलदसमशोभन, परमहंस मुनिमानसलोभा।

विगलितसकल सुजन मन छोभा, भवभय विपति विराम ।।२।।

मम परिताप सकल हरि हर लें रिपु सन्ताप दूर प्रभु कर दें।

दिशि दिश में निर्मल यश भर दें हरें दुरित परिणाम ।।३।।

शत्रु मार, कर लें मखरक्षण, हरें निशाचर गर्व विचक्षण ।

करें शुम्भकार्मुकखण्डन प्रभु, सीता ललित ललाम ।।४।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

अहो ! इमं विलाकयतो मे नैव तृप्यतो निर्निमेषनयने। किं भणिष्यन्ति मां पारिषद्याः ? भवतु ! न भवति रागोनाम निरपवादः

अहं तु-

कौसल्याशुचिशुक्तिसम्भवमिदं लौल्यैकमूल्यं पितुः,
कोषं भावुकभावसम्पुटगतं श्लाघ्यंमहार्हं सताम् ।
सम्पृक्तं सुमनोज्ञनीलमहसा ज्ञेयं परं योगिनाम्,
सीताकण्ठविभूषणं प्रियतमं श्रीरामरत्नं श्रये ।।१७।।

(कौसल्याभिमुखं विश्वामित्रः)

अनुजानीहि कौसल्ये स्वाङ्कमारोप्य राघवम् ।
तन्मुखेन्दुसुधा माध्व्या कृशयेयं दृशोस्तृषम् ।।१८।।

(कौसल्या तथाकर्तुमुद्यता)

अहो! इन्हें देखते हुए मेरे अपलकनेत्र तृप्त नहीं हो रहे हैं।

सभासद मुझे क्या कहेंगे?

ठीक है। राग कभी बिना अपवाद का नहीं हुआ करता।

मैं तो – कौसल्यारूपी पवित्रसीपी में उत्पन्न, दर्शन की व्याकुलता ही एकमात्र जिसका मूल्य है, पिताश्रीदशरथ की एकमात्र निधि भावुक भक्तों के भावरूप सम्पुट में स्थित सन्तों के लिए स्तुत्य एवं बहुमूल्य सून्दर नीलकान्ति से युक्त,, योगियों के परमश्रेय सीताजी के कण्ठ के आभूषण परम प्रियतम श्रीरामरूपी नीलरत्न का आश्रय करता हूँ ।।१७।।

हे कौसल्या ! अनुमति दो कि मैं श्रीराघव को अपनी गोद में बिठाकर उनके मुखचन्द्र की सुधामाधुरी से आपने नेत्रों की पिपासा बुझा सकूँ।

(कौसल्या गोद में देना चाहती है)

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.

http://www.jagadgururambhadracharya.org/

(नेपथ्ये)

नैव नैव कौसल्ये!

न दातव्यो न दातव्यो रामोऽस्मै भिक्षवे सति।

निर्घृणो निष्ठुरश्चायं वसिष्ठसुतशातनः ।।१६।।

विश्वामित्रः- (सकम्पम्)

अये! का नाम कौसल्यां वारयति?

आम्! ज्ञातम् । इयम् मया निघ्नभर्तृका वसिष्ठपुत्रवधू अदृश्यन्ती नाम।

भर्तृविश्लेषविक्षुब्धा निघ्नतीव वचः शरैः ।

कौमुदीव घनच्छन्ना अद्श्यन्ती न दृश्यते ।।२०।।

तदिमां अनुनेतुं प्रयते । यतो हि अमोघपरिणामो नाम सतीनां आक्रोशः ।

(नेपथ्याभिमुखः विश्वामित्रः)

(नेपथ्य में) नहीं नही कौसल्या ! हे सती ! इस भिक्षुक की गोद में श्रीराम को मत दो मत दो। वसिष्ठपुत्रों को हनन करने वाला यह ऋषि बहुत ही निर्दय और निष्ठुर है ।।१६।।

विश्वामित्र– (काँप कर) यह कौन कौसल्या को रोक रही है।

हाँ जान लिया यह मेरे जिसके पति का वध किया गया है ऐसी वसिष्ठ जी की पुत्रवधू अदृश्यन्ती है।

पति के वियोग से विक्षुब्ध बचन बाणों से मुझे प्रताडित करती हुई सी मेघ से ढकी हुई चाँदनी के समान अदृश्यन्ती दिखाई नहीं दे रही है।।२०।।

तो इनसे अनुनय करने का प्रयास करता हूँ । क्योंकि सतियों का आक्रोश अमोघ परिणामवाला होता है।)

(नेपथ्य की ओर मुख करके विश्वामित्र)

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

क्षामये त्वां भर्तृवियोगक्षामां शक्तिधर्मपत्नीम् ।
दण्डं चण्डं देहि मह्यं यथेच्छम्,
शापाग्नौ वा भस्मसान्मां कुरुष्व ।
किन्तु स्मेराम्भोरुहाक्षं मुकुन्दम्
द्रष्टुं मां मा विघ्नविद्धं विधेहि ।।२१।।

अरुन्धती- अलम् अत्यधिकरोषेण पाराशरजनन्या ।

पश्य पुत्रि !

यस्य शापानिलोद्धूता रम्भारम्भेवकम्पिता ।
सोऽयं साश्रुमुखो दीनो याचते त्वां क्षमां शुभे ।।२२।।
रामभद्रपदाम्भोजरेणुभि र्ध्वस्तकल्मषः ।
विश्वामित्रः- स्वकं भद्रे प्रायश्चित्तं चिकीर्षति ।।२३।।

पति के वियोग से दुर्बल, शक्ति की धर्मपत्नी अदृश्यन्ती आपसे मैं क्षमा माँग रहा हूँ । हे अदृश्यन्ती आप अपनी इच्छा से चाहे मुझे कठोर से कठोर दण्ड दे दें अथवा अपनी शापग्नि में मुझे भस्म कर दें किन्तु विकसित कमल के समान नेत्र वाले श्रीराम के दर्शन में विघ्न से मुझे प्रताडित न करें ।।२६।।

अरुन्धती– बस! बस ! पाराशर की मां को अधिक क्रोध करना उचित नहीं है।

देखो बेटी ! श्रीरामभद्र के चरणकमल की रेणु से अपनी कुटिलता को नष्ट करके विश्वामित्र प्रायश्चित करना चाहते हैं।

हे शुभे, जिनके शापवायु से प्रताडित रम्भा अप्सरा कदली के समान काँप गई वे ही विश्वामित्र आज आँसू बहाते हुए दीन होकर तुमसे क्षमा माँग रहे हैं।।२३।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas All Rights Reserved.

http://www.jagadgururambhadracharya.org/

अदृश्यन्ती- न खलु मदीये इयं विशेषता । अयं मम रामभद्रचरणारविन्द दर्शनानुभावः यतो हि-

हरिश्चन्द्रस्य पुरतो य आसीच्चण्डकौशिकः ।
रामचन्द्रसमीपेऽभूत् स एव भिक्षुकौशिकः ।।२४।।

(प्रकाशम्, विश्वामित्राभिमुखी)

अदृश्यन्ती- भवतु । क्षान्तोऽसि ! समनुज्ञातोऽसि मा त्वत्कल्याणदृष्ट्या निष्कपटं राघवं लालयितुम् ।

रामचन्द्रमुखचन्द्ररोचिषा, पूतमानसविधूतकल्मषः ।
तत्पदाम्बुरुहरेणुसेवया, क्षालयस्व वृजिनं पुरा कृतम् ।। २५।।

विश्वामित्रः- समनुगृहीतोऽस्मि आर्यया ।

(ततः राघवं परिप्वष्य तत्कर्णान्तिके शनैः)

अदृश्यन्ती– यह मेरी विशेषता नहीं है यह तो मेरे रामभद्र के चरणाविन्द के दर्शन का प्रभाव है। क्योंकि–

जो विश्वामित्र हरिश्चन्द्र के समक्ष चण्डकौशिक थे वही आज मेरे रामचन्द्र के सामने भिक्षुकौशिक हो गये हैं।।२४।।

(बाहर आकर विश्वामित्र के सामने होकर)

अदृश्यन्ती –ठीक है! तुम्हें क्षमाकर दिया ।

तुम्हारे कल्याण की दृष्टि से निष्कपटभाव से श्रीराम को दुलारने की तुम्हें आज्ञा है।

हे विश्वामित्र ! रामचन्द्र के मुखचन्द्र की कान्ति से मन को पवित्र कर एवं अपनी कुटिलता को दूर करके श्रीहरि के चरणकमल की परागसेवा से पूर्वकृत पापों का प्रक्षालन कर लो ।।२५।।

विश्वामित्र– आर्या के द्वारा मैं अनुगृहीत हूँ । (तत्पश्चात् राघव को गले लगाकर धीरे से कान के समीप)

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

राघव ! जानन्नपि पुराणपुरुषोत्तमं परब्रह्मपरमेश्वरं भुवोभारापजिहीर्षया दशरथकौसल्या भक्तिवशंवदं हंसवंशेऽवतीर्ण तत्रभवन्तं भगवन्तं जीवस्वभावेन किञ्चिद् विज्ञापयामि -

त्रातुं यज्ञं युधि निशिचरान् राम ! हत्वा शरौघै,
मुक्तां कर्तुंचरणरजसा विप्रपत्नीमघौघात् ।
भंक्तुं चापं भृगुपतिगुरोर्जानकीं चोपयन्तुम्,
गत्वारण्यं कुरु सह मया स्वावतारोपयोगम् ।।२६।।

रामः- (सविनयम्) यथा निर्दिशति कुलपतिः ।

दशरथः- (कृताञ्जलिः) सर्वतः परिपूर्णकामस्य गाधिनन्दस्य किं मादृशैः-

तथापि सुश्रूषुरिमाभवद् गिरः सुधामयीर्यन्मुखरत्वमागतः ।
ततो भवद्भिः करुणावशंवदै र्निगद्यतामागमनप्रयोजनम् ।।२७।।

हे राघव! पृथ्वी का भार उतारने की इच्छा से दशरथ और कौसल्या की भक्ति के वश में होकर सूर्यवंश में अवतीर्ण पुराण पुरुषोत्तम परब्रह्म परमात्मा के रूप में आपको जानता हुआ भी अपने जीवस्वभाव से आपको कुछ कह रहा हूँ। युद्ध में बाणों से राक्षसों को मारकर यज्ञरक्षा के लिए तथा अपनी चरणरज से ब्राह्मणपत्नी को पापमुक्त करने के लिए भगवान शंकर का धुनर्भग करने एवं सीताजी का पाणिग्रहण करने के लिए मेरे साथ बन में जाकर अपने अवताार का उपयोग कीजिए ।।२६।।

राम – (विनयपूर्वक) जैसी कुलपति की आज्ञा।

दशरथ– (हाथ जोड़कर) सब प्रकार से पूर्णकाम विश्वामित्र का मुझ जैसों से क्या प्रयोजन हो सकता है? फिर भी आपकी कल्याणकारिणी वाणी को सुनने की इच्छा से मै मुखर हो उठा हूँ । अतः कृपा करके अपने आगमन का प्रयोजन बताएँ ?।।२७।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas. All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

कौशिकः- साधु! सदृश्मेतद्रघुकुलसमलंकरणस्य वसिष्ठशिष्यस्य चक्रवर्तिनोऽस्य दशरथस्य ।

राजन् ! किञ्चिन्मया विज्ञाप्यं तत् सावधानः समाकर्णय ।

दशरथः- समवहितोऽस्मि मुनिवर्य ! निर्दिश्यताम् एष विधेयः ।

विश्वामित्रः- भूपालमुकुटमणे ! श्रुतौ कदाचित् तत्रभवता पुलस्त्यकुलकलंकस्य लोकरावणरावणस्य यज्ञविध्वंसतत्परौ क्रूरावनुचरौ ताटकेयौ धार्मिकजनोत्साहचन्द्रराहू महाबाहू मारीचसुबाहू ।

दशरथः- ततस्ततः ।

विश्वामित्रः- यदा यदाऽहं नृप यष्टुमीहे,

समावृतो होतृवरैः सदस्यैः ।

तदा तदा तावथ ताटकैयौ

मांसादिभिर्दूषयतो मखं मे ।।२८।।

विश्वामित्र– साधु! रघुकुल के अलंकार, वसिष्ठ के शिष्य चक्रवर्ती दशरथ के लिए यहीं उचित है।

राजन्– मैं कुछ कह रहा हूँ । सावधान होकर सुनो ।

दशरथ– मैं सावधान हूँ । सेवक को निर्देश दें।

विश्वामित्र– हे भूपालचूडामणि ! अगस्त्यकुल के कलंक, लोकरावण रावण के अतिक्रूर अनुचर, यज्ञविध्वंसकारी, धार्मिकजनों के उत्साहरूप चन्द्रमा के लिए राहुसमान महाबाहु मारीच एवं सुबाहु के सम्बन्ध में आपने कभी सुना है?

दशरथ– फिर फिर ।

विश्वामित्र– हे राजन् ! जब जब मैं होतृसदस्यों के साथ यज्ञ करने की इच्छा करता हूँ तब तब ये दोनों ताड़कापुत्र मारीच और सुबाहु मांसादि से मेरे यज्ञ को दूषित कर देते हैं।।२८।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

राजाः- हा ! धिक् कष्टम् । ततस्ततः ।

विश्वामित्रः- अथाहं भग्नसंकल्पो निर्विकल्पः रघुकुलदानगाथा श्रवणसमीरितमनोरथो महारथं दशरथं याचिष्यमाणोऽयोध्यामागमम्।

राजा - परमं सौभाग्यं मदीयम् । निःसंकोचं याच्यताम् ।

धेनुश्चकोषो द्रविणं मणिर्वा, दास्यश्च कन्या उत निष्कण्ठ्यः ।
प्राज्यं महीराज्यमकण्टकं वा किन्ते प्रदेयं वद विप्रवर्य ।।२६।।

विश्वामित्रः- (विहस्य) न खलु न खलु! राजेन्द्र! नाहं तथाविधो याचकः ।

याचन्ते याचकाश्चान्ये रत्नराशिं विनश्वरम् ।
किन्त्वहं नृपशार्दूल ! याचे रत्नमनश्वरम् ।।३०।।

राजा हा! धिक्कार है। बहुत कष्ट की बात है। इसके बाद !

विश्वामित्र– अब अपने संकल्प के नष्ट होने पर अन्य विकल्प न रहने पर रघुकुल की दानगाथा के श्रवण से प्रेरित मनोरथवाला मैं महारथी दशरथ से कुछ माँगने अयोध्या आया हूँ।

राजा– यह मेरा परम सौभाग्य है। आप निस्संकोच माँगिये धेनु, कोष, मणि, दासियाँ, हार से सुसज्जित कन्याएँ स्वर्ण भण्डार, पृथ्वी, निष्कण्टक राज्य इन सबमें से आपको क्या दिया जाए. हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! आप आज्ञा कीजिए ।।२६।।

विश्वामित्र (हँसकर) नहीं नहीं राजेन्द्र ! मैं उस प्रकार का याचक नहीं हूँ । अन्य याचक क्षणभंगुर रत्नों की याचना करते हैं किन्तु हे राजेन्द्र ! मैं अविनाशी रत्न की याचना कर रहा हूँ। ।।३०।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.

http://www.jagadgururambhadracharya.org/

राजा - (सोत्कण्ठम्) कुत्र तत् ?

विश्वामित्रः - अत्रैव कोसलेन्द्रकोषे । राजमहिष्या कौसल्याप्रसूतं तत् भवता महता प्रयत्नेन सुरक्षितञ्च।

राजन् ! नीलोत्पलदलश्यामः काकपक्षधरः शिशुः ।
लक्ष्मणानुचरोधन्वी रामभद्रः प्रदीयताम् ।।३१।।

राजा - (दीर्घ निःश्वस्य) प्रस्खलन्, हा ! हा ! अत्याहितम्

महाप्रयत्नतः प्राप्तं प्राणात्प्रियतरं सुतम् ।
कथं दद्यामहं रामं बालं कञ्जविलोचनम् ।।३२।।

क्षम्यतां कुशिकनन्दनेन। सर्वं द्रविणजातं देयं किन्तु रामभद्रो मम सर्वथैवादेयः। को नाम मन्दधीः स्वात्मानं याचकाय दद्यात् प्रभो! त्रायस्व । म्रियमाणमेतद् राजकुलम् । चतुरंगबलसंयुक्तो भवन्निदेशं परिपालयन् अहमेव निशाचरैः सह धनुष्पाणिर्योत्स्ये किन्तु-

ऊनषोड़श वर्ष तं रामं राजीवलोचनम् ।
अनभ्यस्तायुधं बालं नैव दास्यामि राघवम् ।।३३।।

राजा– (उत्कण्ठापूर्वक) वह कहाँ है?

विश्वामित्र– यहीं कोसलेन्द्र के कोष में हैं जिसे राजमहिषी कौसल्या ने जन्म दिया और आपने बड़े प्रयास से उसकी रक्षा की है।

हे राजन! नीलकमलदल के समान श्याम, काकपक्षधारी, धनुर्धारी शिशुरामभद्र को लक्ष्मण के साथ दे दीजिए ।।३१।।

राजा– लम्बी श्वास लेकर) लड़खड़ाते हुए,

हाय! हाय! बहुत अनर्थ हो गया ।

महान् प्रयत्न से प्राप्त किए हुए, प्राण से भी अधिकप्रिय कमल के समान नेत्रोंवाले बालक राम को मैं कैसे दे सकता हूँ । ।।३२।।

कुशिकनन्दन क्षमा करें। मेरे द्वारा सम्पूर्ण धन देय है किन्तु मेरे रामभद्र सर्वथा अदेय हैं। कौन ऐसा मूर्ख होगा जो अपनी आत्मा को ही याचक को देदे। प्रभो ! मरते हुए इस राजकुल की रक्षा करो। आपके निर्देश का पालन करते हुए चतुरंगिणी सेना से युक्त धनुषधारण करके मैं ही राक्षसों के साथ लड़ूँगा । किन्तु–

सोलहवर्ष से भी कम आयु वाले कमलनेत्र शस्त्रशास्त्र में अनभ्यस्त बालक राम को मैं नहीं दूँगा। ।।३३।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

विश्वामित्र- (ईषदावेशं नाटयन्) किमुच्यतेऽधुना भानुवंशप्रदीपेन ? नैव लोके कौसल्यामन्तरेण काचित् सीमन्तिनी, यत्प्रसूतः

सुतः प्रतीकर्तुं शक्नोतु तावमोघवीर्यौ ताटकेयौ ।
न तौ रामं समासाद्य स्थास्यतो राक्षसौ रणे।
नंक्ष्यतः क्षिप्रमाप्लुत्य पतंगाविव पावकम् ।।३४।।

राजन् ! नास्मिद्विधा व्यलीक प्रलपन्ति। नैव ते राघवः प्राकृतबालकः । इममहं वसिष्ठश्च पूर्णतया जानीवहे।

नरपते ! भूतार्थवादो नृपनार्थवादः,
सुनिर्विवादः सुतवीर्यवादः ।
प्रतीयतां चेतसि नीयतां कं,
प्रदीयतां सम्प्रति राघवो मे ।।३५।।

विश्वामित्र– (कुछ आवेश का अभिनय करते हुए) सूर्य कुल के दीपक इस समय क्या बोल रहे हैं ? लोक में कौसल्या के अतिरिक्त ऐसी कोई भी स्त्री नहीं है जिससे उत्पन्न पुत्र, अमोघवीर्य ताड़का के पुत्रों का प्रतिकार कर सके।

राम के समक्ष राक्षस युद्ध में टिक नहीं सकेंगे। वे उसी प्रकार शीघ्र नष्ट हो जायेंगे जैसे अग्नि में पड़कर पतंगे।।३४।।

हे राजन ! हम जैसे लोग झूठ नहीं बोलते ! तुम्हारा राघव प्राकृत बालक नहीं है इनको मैं तथा वसिष्ठ पूर्ण रूप से जानते हैं।

हे नृप ! यह भूतार्थवाद है, अर्थवाद नहीं । तुम्हारे पुत्र का शक्तिवाद निर्विवाद है। चित्त को प्रसन्नतापूर्वक सुख की ओर ले जाओ और सम्प्रति राघव को मुझे दे दो । ।।३५।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

दशरथः- देव ! विसंकटसंकटे पातितोऽहम् यद्यपि सर्वे पुत्राःमत्प्राणसमाः प्रियाः तथापि रामस्तु मे आत्मनोऽप्यात्मा तेन विप्रयुक्तोऽहं मुहूर्तमपि न जीविष्यामि । मर्षय मां, गाधिकुलनन्दन मर्षय । (इति पादयोः पतन् भूयः प्रार्थयते)

(करुणं गायति) गीतम्

राघवमहं न दास्ये मरणेऽपि हे मुनीश्वर ।
प्राणः न मे भवेयुर्दानादितो यतीश्वर ।।
नीरं विनापि मीनो देहं धरेत् कदाचित् ।
धर्तुं त्वहं न शक्ये रामं बिना तनुं स्वित् ।।
गात्रेषु वेपथुर्मे भीतस्य हे शुभाकर ! राघवमहं ....
महतः प्रयत्नतो मे लब्धाश्चतुः कुमाराः,
पितृमातृ परिजनानां जीव्या इमे उदाराः ।
लोचनचकोरचन्द्रं दास्यामि नैव मुनिवर ।। राघवमहं ....

दशरथ – हे देव! आपने मुझे बहुत बड़े संकट में डाल दिया है। यद्यपि सभी पुत्र मुझे प्राणसमान प्रिय हैं फिर भी राम मेरी आत्मा के भी आत्मा हैं। उनसे वियुक्त होकर मैं एक क्षण भी नहीं जी सकूँगा। हे गाधिकुलनन्दन! क्षमा करें । क्षमा करें।

(ऐसा कह कर चरणों में गिरकर बार बार प्रार्थना करते हैं और सकरुण गाते हैं –

गीत

राघव को मैं न दूँगा मुनिनाथ मरते मरते ।
मेरे प्राण ना रहेंगे यह दान करते करते ।।
जल के बिना कदाचित् मछली शरीर धारे ।
पर मैं न जी सकूँगा इनको बिना निहारे ।
कौशिक सिहर रहे हैं मेरे अंग डरते डरते । राघव..............................
कर यत्न चौथे पन में सुत चार मैने पाया।
पितु मातु पुरजनों को रघुचन्द्र ने जिलाया।।
लोचनचकोर तन्मय छवि पान करते करतें । राघव ....

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

यान्तं निरीक्ष्य नाथं शून्या भवेत्पुरीयम् ।

स्थातुं कथं हि शक्या कौशिक बिना तुरीयम् ।

त्रायस्व शोकवह्नेः पौरान् कृपापयोधर ।। राघवमहं....................

भगवन् प्रसीद लब्ध्वा राज्यं धनं सकोषम्,

गन्तास्मि पुत्रभार्यायुक्तो वनं सतोषम् ।

याचस्व मा सुतं मे मां संकटात्समुद्धर । राघवमहं ....

बालौ सुकोमलाङ्गौ श्रीरामलक्ष्मणौ मे ।

युद्धं कथं घटेताम् पुत्रावचक्षणौ मे।

गिरिधर प्रभुं न दास्ये रोषं ऋषे समाहर। राघवमहं ....

चलते विलोक प्रभु को होगा उजाड़ कोसल ।

मंगल भवन के जाते सम्भव कहाँ से मंगल ।।

सीचें कृपालु तरु को मृदुपात झरते झरते । राघव ....

होवें प्रसन्न मुनिवर लें राजकोष सारा।

रानी सुतों के संग मैं बन में करूँ गुजारा।

ले गोद राम शिशु को सुख मोद भरते भरते । राघव ....

लड़के हैं राम लक्ष्मण कैसे करें लड़ाई ।

गिरिधर प्रभु को देते बनता नहीं गुसाई ।

कह यों पड़े चरण में, दृग नीर ढरते ढरते । राघव..............................

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

विश्वामित्रः- (परं क्रोधमुद्रां नाटयन्)

भवतु ! स्वस्ति भानुकुलभानवे। काकुत्स्थ ! मिथ्याप्रतिज्ञो भव। परमपावनदिनकरकुले रिक्तहस्तो याचकः प्रथमपरीवादाविष्कारं समर्पयन् यथागतं गच्छामि। दुर्भाग्यमेतन्मदीयंयत्पारिजातमूलमपि मत्कृते रिक्तकोषम् ।

(इति सोद्वेगः हस्तेन भूतलं ताडयति)

(नेपथ्ये) उपसंहर ! उपसंहर ! कृतान्तदुर्निवाररोषज्वालावलिम् ।

वेपन्ते दिग्गजाः भीताः कम्पते च वसुन्धरा।
समुच्छलति पाथोधिः पततीव दिवाकरः ।।३७।।

सभासदाः - क्षम्यतां क्षम्यतां कुशिकवंशकेतुना (इति चरणग्रहण पुरस्सरं अनुनयन्ति)

वसिष्ठः- (विश्वामित्राभिमुखः) अलं अलं ब्रह्मर्षिवर्य !

समतिक्रान्तवेलमिव होंकारझंकार दीर्घनिःश्वाकल्लोललोलायितुं क्रोधवारांन्निधिं घटयोनिरिव हृदये नियच्छ । पुत्रवात्सल्यपरवशो राजा यन्न्यगादीत् तत्सर्वथा तदनुरूपम् ।

विश्वामित्र– (अत्यन्त क्रोध मुद्रा का अभिनय करते हुए)

ठीक है ! भानुकुल के भानु तुम्हारा कल्याण हो। हे काकुत्स्थ ! असत्यवादी हो ! परमपवित्र सूर्यवंश में प्रथमबार निन्दा का आविर्भाव अर्पित करके यह याचक खाली हाथ जैसा आया था वैसा ही जा रहा है। यह मेरा दुर्भाग्य है कि कल्पवृक्ष का मूल भी मेरे लिए रिक्त कोष है। (ऐसा कहकर उत्यन्त उद्वेग के साथ अपना हाथ पृथ्वी पर पटकते हैं)

(नेपथ्य में) काल के द्वारा भी न रोके जाने वाले क्रोध के ज्वालासमूह को समेट लो। समेट लो। दिग्गज भयभीत होकर काँप रहे हैं और पृथ्वी भी काँप रही है। समुद्र में उफान आ रहा है। और सूर्यनारायण टूटकर गिर से रहे हैं ।।३६।।

सभासद– कुशिकवंश केतु क्षमा करें । क्षमा करें । (विश्वामित्र के चरण पकड़कर अनुनय करते हैं)

वसिष्ठ– (विश्वामित्र की ओर मुख करके) बस ! बस ! ब्रह्मर्षिवर्य ! जिसने अपनी मर्यादा का उल्लंघन कर लिया है ऐसे हुंकाररूप झंकार तथा दीर्घनिःश्वास रूप लहरों से युक्त अपने क्रोध के महासागर को अगस्त्य की भाँति अपने हृदय में नियन्त्रित कर लें । पुत्रवात्सल्य के परवंश महाराज ने जो कुछ कहा वह उनके अनुरूप ही है।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas. All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

पश्य गाधेय !

प्रयत्नेनैव महता प्राप्तं चिन्तामणिं शुभम् ।

को नाम मन्दधीर्दातुं उत्सहेत सुदुर्लभम् ।।३८।।

तथाप्यहं माधुर्यातिरेकेण किचित् विस्मृतमिव भगवन्माहात्म्यं चक्रवर्तिनं बुबोधयिषुः प्रयते महीपतिं समनुनेतुम् ।

(दशरथामिभुखः)

वसिष्ठः- हरिश्चन्द्रवंशवर्धन ! किमिव प्रतिज्ञां विधाय करतलगतामिव सुधां वशीकृतामिव वसुधां जिहाससीव! वत्स! त्रायस्व पूर्व पुरुष मर्यादाम् ।

दशरथः- (साश्रुनयनः)

कथमिन्दीवरश्यामं काकपक्षधरं सुतम् ।

अभिरामहं रामं मुनये दातुमुत्सहे ।।३६।।

हे विश्वामित्र देखो !

बहुत प्रयत्न से प्राप्त शुभ एवं दुलर्भ चिन्तामणि को कौन मन्दबुद्धि देने के लिए उत्साहित होगा ।।३८।।

तो भी मैं माधुर्य की अधिकता से कुछ भूले से चक्रवती राजा दशरथ को समझाने का प्रयत्न करता हूँ ।

वसिष्ठ– राजा हरिश्चन्द्र के वंश को बढ़ाने वाले राजन् !

प्रतिज्ञा करके करतलगत अमृत को तथा वश में ही हुछ पृथ्वी को क्यों छोड़ना जैसा चाहते हो । वत्स ! अपने पूर्वजों की मर्यादा की रक्षा करो।

दशरथ– (अश्रुपूर्ण नेत्रों से) नीलकमल के समान श्यामल, कन्धे तक लटके हुए केशवाले सुन्दर पुत्र राम को मुनि को देने का उत्साह मैं कैसे कर सकता हूँ? ।।३६।।

© Copyright 2012 Shri Tulsipeeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

वसिष्ठः- राजन् ! विस्मरसि किम् ! एष हि भुवनहितच्छलेन कारणमानुषः वेदान्तवेद्यपुराणपुरुषपरमात्मा सुरकार्यसाधनैकलक्षः दशवदनवदन विघटनचिकीर्षया तव भक्तिभागीरथीविगाहनविलुब्धचेताः स्वजन्मना कौसल्यां समलंचकार । तदिमं समधीतसकलशास्त्रं मुनिजनधनं सुजनशारंगशावकस्वातिघनं नक्तंचरकरनिकरसहांरसमीप्सया संयाचमानाय निरभिमानाय कौशिकाय सादरं समर्पय ।

श्रेयां विधास्यति मुनिः सुतयोर्द्वयोस्ते,

युक्तौ करिष्यति समर्जितदिव्यशस्त्रैः ।

त्रात्वा मखं विवुधकार्यमथो विधाय

भूयः समेष्यति पुरस्तव राघवोऽयम् ।।४०।।

दशरथः- श्रीचरणवचनरविकरनिकरैर्विध्वस्तमोहपटलोऽहं यज्ञरक्षणार्थं श्री रामलक्ष्मणो विश्वामित्राय सादरं समर्पये।

वसिष्ठ– हे राजन् क्या भूल रहे हो कि लोकहित के बहाने से मनुष्यरूप धारण कर वेदान्तवेद्य पुराणपुरुष परमात्मा इन राम ने देवकार्यसिद्धि का एकमात्र लक्ष्य रखकर रावण के सिरों को काटने की इच्छा से आपकी भक्ति गंगा में अवगाहन हेतु लालायित चित्त होकर अपने जन्म से कौसल्याजी को अलंकृत किया है। इसलिए सम्पूर्ण शास्त्रों का अध्ययन किये हुए, मुनिजनों के धन, सज्जनरूप चातक के लिए स्वातिनक्षत्र के मेघ के समान, राक्षस समूह के संहार की इच्छा से माँगते हुए अभिमान रहित विश्वामित्र जी को सादर समर्पित करो।

मुनि आपके दोनों पुत्रों का कल्याण करेंगे। और इनको अपने द्वारा अर्जित दिव्यशस्त्रों से युक्त करेंगे। यज्ञ की रक्षा कर तथा देवों का कार्य करके श्रीराघव आपके नगर को पुनः आयेंगे । ।।४०।।

दशरथ– आपके बचनसमूहरूप सूर्य की किरणों के समूह से मेरा मोहरूप अन्धकार नष्ट हुआ। मैं यज्ञ की रक्षा के लिए श्रीरामलक्ष्मण को मुनि विश्वामित्र जी को सादर समर्पित कर रहा हूँ।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

(रामलक्ष्मणौ हस्तसंकेतेन समाहूय)

आगच्छतं ममलोचनचातकजलधरौरघुवरौ ।

(रामलक्ष्मणौ आगत्य प्रणमतः)

रामलक्ष्मणौ - आज्ञाप्येतां इमौ श्रीमच्चरणकमलचञ्चरीकौ ।

दशरथः- (सजललोचनः) पुत्रौ अद्य रघुकुलधर्मतः प्रतिज्ञामनुपालयन् निशाचरवंश जिघातयिषया यज्ञरक्षणाय कुशिकपुत्राय वाम् समर्पये । तत्र स्वकीयसेवया सर्वभावेन कौशिकं तोषयितुं प्रयतेताम् । अविचार्य महर्षेः सर्वाअपि आज्ञाः परिपालनीयाः ।

(रामलक्ष्ममण को हाथ के संकेत से बुलाकर)

मेरे नेत्ररूपचातक के बादल, रघुश्रेष्ठ, बालको ! यहाँ आओ ।

(श्रीरामलक्ष्मण आकर प्रणाम करते हैं)

रामलक्ष्मण– आपके चरणकमलों के भ्रमररूप हम दोनों को आज्ञा करें।

दशरथ– (अश्रुपूर्ण नेत्रों से) पुत्रो ! आज रघुकुल के धर्म के अनुसार प्रतिज्ञा का पालन करते हुए राक्षसवंश का विनाश कराने की इच्छा से यज्ञ की रक्षा हेतु तुम दोनों को विश्वामित्र जी को सौप रहा हूँ । वहाँ अपनी सेवा से सब प्रकार से आप दोनों कौशिक जी को सन्तुष्ट करने का प्रयत्न करें। विचार किये बिना ही आपको महर्षि की सब आज्ञाओं का पालन करना चाहिए।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

राघवेन्द्रः- (भुजा उत्थाप्य)

एषोऽहं दाशरथिःकौशल्यानन्दनो रामः अस्यां राजपरिषदि, शपथपुरस्सरं प्रतिजाने -

उद्दण्डोद्धतचण्डकार्मुकसमुक्षिप्तेषु दम्भोलिभि,

निर्भिद्यासुरधैर्यशैलशिखरं दोर्दण्डयोर्लीलया।

युद्धे तोषिततताण्डवो रिपुगणान् निर्मथ्य वीर्योत्काटान्

रामस्ते चरणाम्बुजं पुनरपि प्रेम्णा ग्रहीता पितः ।।४१।।

सर्वेसभासदः- साधु ! साधु! वीरप्रसूः खलु कौसल्या ।

रामः- तात ! तावन्मातृः प्रणम्य भरतादीन् सम्बोध्य सलक्ष्मणः समागच्छामि।

वसिष्ठदशरथौ- सत्वरं तथैव विधेहि मर्यादापुरुषोत्तम !

राघवेन्द्र– (भुजा उठाकर) यह मैं दशरथतनय कौसल्यानन्दन राम इस राजसभा में शपथपूर्वक प्रतिज्ञा करता हूँ कि –

उन्नत एवं उद्धत प्रचण्ड धुनष से निक्षिप्त बाणरूपी वज्रों से राक्षसों के धैर्यरूपी पर्वतशिखर को भेदकर भुजदण्डों की लीला से युद्ध में, ताण्डवनृत्यकारी शिवजी को प्रसन्न करके उत्कटशक्तिशाली शत्रुसमूह को नष्ट करके हे पिताश्री ! मैं राम पुनः आपके चरणकमलों को प्रणाम करूँगा ।४१।।

सब सभासद – सुन्दर ! सुन्दर कौसल्याजी निश्चय ही वीर जननी हैं।

राम– हे पिताजी ! तब तक माताओं को प्रणाम करके भरतादि को समझाकर लक्ष्मण सहित आता हूँ ।

वसिष्ठ और दशरथ– मर्यादापुरुषोत्तम राम ! शीघ्र वैसा ही करो।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

रामः- (निष्क्रम्य मातृणामभिमुखः)

जनन्यः !

अनुजानन्तु नौ प्रीत्या क्षान्त्वा दोषं च मामकम् ।

समभ्युदयमेवैतद् ईहमानाः शुचिस्मिताः ।।४२।।

कौसल्या- गच्छ गच्छ सुतश्रेष्ठ ! निहत्य समरे रिपून् ।

दुग्धं विश्राव्य मे पुत्र ! पुनरायाहि सानुजः ।।४३।।

रामः- अनुगृहीतोऽस्मि ।

कैकेयी - (सोत्कण्ठा राघवं परिष्वज्य)

याहि वीर ! शुभं भूयात् जहि संग्राम कोविदः ।

दोर्दण्डलीलया खेलन् मृगेन्द्र इव शात्रवान् ।।४४।।

रामः- कृतकृत्योऽस्मि ।

सुमित्रा- श्रेयसे वृद्धये चाापि पुंनरागमनाय च।

गच्छ तात यशाशीघ्रं विनाशाय सुरद्विषाम् ।।४५।।

राम– (निकलकर माताओं के सम्मुख होकर) माताओं ! मेरे दोषों को क्षमा करके मेरे मंगलमय अभ्युदय की कामना करती हुई आप सब माताएँ प्रेमपूर्ण पवित्र मुस्कान के साथ हम दोनों को स्नेह से जाने की आज्ञा दें ।।४२।।

कौसल्या– हे पुत्र श्रेष्ठ ! जाओ ! जाओ! युद्ध में शत्रुओं को मारकर मेरे दूध को ख्यापित करके अनुज लक्ष्मण सहित पुनः आओ ।।४३।।

राम– मैं अनुगृहीत हूँ ।

कैकेयी– (उत्कण्ठा सहित श्रीराघव को गले लगाकर)

हे वीर! जाओ ।आपका शुभ हो ! हे रणकुशल । अपनी भुजाओं की लीला से खलते हुए सिंह के समान शत्रुओं का वध करो ।।४४।।

राम– कृतकृत्य हूँ ।

सुमित्रा– हे तात! कल्याण तथा वृद्धि हेतु एवं पुनः आगमन के लिए राक्षसों के विनाश के लिए यथाशीघ्र जाओ ।।४५।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

(सर्वाः प्रणम्य निष्क्रम्य)

(मित्राभिमुखः)

भो ! भो ! अभिनन्दनप्रभृतयो मे सखायः ।
चिरं युष्माभिर्वै सह विविधकेलिर्हि विहिता,
सरय्वास्तीरेषु प्रथितशरविद्येन हि मया
अतो युष्मांस्त्यक्त्वा मुनिमखकृते गच्छति बनम्,
सखा वो रामोऽयं किल समनुजानीत सुहृदः ।।४६।।

सखायः (रुदन्तः) अतो गच्छ वीर! यावत्पुनर्नागमिष्यसि तावन्न क्रीड़िष्यामः ।

विश्वामित्रं भुजबललसत्सेवया तोषयित्वा,
मारीचादीन् शलभनिकरान् भस्मकृत्वा शराग्नौ ।
यज्ञं त्रात्वा विवुध निकरैर्वन्द्यमानाङ्घ्रिपद्मः
क्रीड़ार्थं नो रघुकुलपुरीं भूय आगच्छ राम ।।४७।।

रामः- तथैव यतिष्यये मित्राणि

राम– कृतार्थ हूँ । (सब माताओं को प्रणाम करके निकल कर)

(मित्राभिमुख होकर) हे अभिनन्दन आदि मेरे मित्रो !

सरयू के तटों पर बाणविद्या से मैंनें आपके साथ क्रीड़ाएँ की । अब आप सब को छोड़कर मुनि के यज्ञ हेतु तुम्हारा मित्र यह राम वन को जाता है। हे मित्रो ! अनुमित दो ।।४६।।

मित्र– (रोते हुए) हे वीर ! जाओ ! तब तक तुम पुनः नहीं आओगे तब तक हम नहीं खेलेंगे । अपनी सुन्दर भुजबल सेवा से विश्वामित्र जी को सन्तुष्ट करके मारीच आदि पतंगो के समूह को बाणरूप अग्नि में जलाकर यज्ञ की रक्षा करके देवसमूह द्वारा चरणकमलों का वन्दन कराकर खेलने के लिए हे राम ! पुनः अयोध्या को आना ।।४७।।

राम– मित्रा ! वैसा ही प्रयत्न करूँगा ।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

(भरतं प्रति)

मयि गते पितरं जननीस्तथा, ममवियोगविषण्ण धियश्चिरम् ।
परिचरेः सततं च सहानुजः शुभरतो भरतस्त्वमुदारधीः ।।४८।।

भरतः- (सानुजः वन्दमानः) आर्य ! तथैव समाचरितुं प्रयतिष्ये । किन्तु (इत्युक्त्वा दीर्घ निःश्वस्य)

रामः- किमिव भद्र !

भरतः -आर्य !

तव पदाम्बुजलुब्ध मधुब्रतं सततमेव भवन्तमधिश्रितम् ।
निजमनन्यगतिं शुचिकिंकरं स्वहृदये भरतं स्मर राघव ।। ४६।।

रामः- समाश्वसिहि । तद्गच्छावः त्वरते कुशिकनन्दनः (इति आगच्छतः)

पुरोहिताः वसिष्ठपुरोगमाः - वर्धस्व कौसलयानन्दवर्धन! विजयीभव सौमित्रिसहायः ।

हत्वाशत्रून् मखं त्रात्वा तोषयित्वा च कौशिकम् ।
सुरैः संगीतकीर्तिस्त्वं सुखमागच्छ कोसलान् ।।५०।।

(भरत से) हे भ्राता ! मेरे जाने पर पिताजी, माताजी तथा मेरे वियोग में दुःखी जनों की चिकाल तक अनुज शत्रुघ्न के साथ उदारबुद्धि और शुभकार्यरत होकर निरन्तर सेवा करना ।।४८।।

भरत– (अनुजसहित अभिवादन करते हुए) भैया ! वैसा ही आचरण करने का प्रयत्न करूँगा। किन्तु (यह कह कर दीर्घश्वास लेकर)

राम–भद्र ! क्या ?

भरत– भैया ! राघवेन्द्र ! आपके चरणकमलों के लुब्ध भ्रमर निरन्तर आपके आश्रित अनन्यगतिक, पवित्र भाव से सेवा करने वाले भरत का अपने हृदय में स्मरण करते रहियेगा ।।४६।।

राम– धैर्य धारण करो। गुरु विश्वामित्र जी शीघ्रता कर रहे हैं तो हम चलते हैं। (ऐसा कह कर आते हैं)

वसिष्ठ आदि के साथ पुरोहित– हे कौसल्यानन्दवर्धन राम ! आपकी वृद्धि हो । लक्ष्मण सहित आपकी विजय हो।

शत्रुओं को मारकर, यज्ञ की रक्षा करके, विश्वामित्र जी को सन्तुष्ट करके, देवो, द्वारा गाई गई कीर्तिवाले तुम अयोध्या को सुखपूर्वक फिर लौट आना ।।५०।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.

http://www.jagadgururambhadracharya.org/

गीतम्

गच्छ राघवं सुखं स्वस्तिमंगलमुखं नाधिकानेहसा भूय आगम्यताम् ।
साधयित्वा मखं तुष्टमारुतसखं सानुजेनाशु सखिभिः समागम्यताम् ।
सुप्रभाताः समाः सन्तु मञ्जुलनिशः वासरं भास्वरं भान्तु भासुरदिशः ।
त्वत्प्रतापानले वाणजिह्वाकुले प्रोज्ज्वले शत्रुभिर्भस्मतां गम्यताम् ।
लब्धविद्यायशः कीर्तिमण्डितदिशः जीवशरदां शतं दिव्यसंयुगरसः ।
दिव्यविजयश्रिया त्वत्पदाम्भोरुहे, हे हरे हृष्टतन्वा समानम्यताम् ।
हे तपनवंशपंकजदिवाकरविमल, पाहि पापीयसः शीलमन्दिर सरल ।
रामराजीवलोचन कृपाकरतरल, चेतसा रामभद्रे सदा रम्यताम् ।

गीत

हे राघव सुखपूर्वक जाओ, आपका मंगलमय कल्याण हो, अधिक शीघ्र ही पुनः आना। अग्नि को सन्तुष्ट करके, यज्ञ को सफल कर श्रीलक्ष्मण के साथ अतिशीघ्र मित्रों से आकर मिलो। आपके वर्ष मंगलमय प्रभात से युक्त हों आपकी रात्रि मुधर हों, आपके दिन तेजोमय हों, आपकी सब दिशाएँ दिव्य आभा से युक्त होकर सदैव सुशोभित रहें। बाणरूप जीभ से युक्त जाज्वल्यमान तुम्हारे प्रतापरूपं अग्नि में शत्रु पतंगे की भाँति भस्म हो जायें आप विद्या और यश प्राप्तकरके सुयश से दिशाओं को सुशोभित कर दिव्य वीरस से सम्पन्न होकर अनन्तवर्ष पर्यन्त जीते रहें। हे भगवन्! अलौकिक विजयश्री पुलकित शरीरवाली होकर आपके चरणकमलों में प्रणाम करे। हे सूर्यवंश रूप कमल के विमल सूर्य! हे शील के मन्दिर! हे सरल श्रीराम! हे कमलनेत्र! हे वत्स! हे चित से तरल अर्थात् करुण! रामभद्र (नाटक के रचयिता) के हृदय में निरन्तर रमते रहें।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas. All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

इति (स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा इति वैदिकमन्त्रेण स्वस्तिवाचनम् पुष्पवृष्टिं शंखनादं च कृत्वा कौशिकेन सह रामलक्ष्मणौ विसर्जयन्तः समवेतस्वरेण) जयोऽस्तु। तरणिवंशतरुणतरणितेजसो जयोऽस्तु प्रख्यातबलपौरुष सम्पन्नरामलक्ष्मणयोः ।

(इति प्रत्युद्गच्छन्ति सर्वे)

इति तृतीयदृश्यम्

(इस प्रकार स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः इस वैदिक मन्त्र से स्वस्ति वाचन, पुष्प वर्षा और शंखध्वनि करके श्रीविश्वामित्र के साथ श्रीरामलक्ष्मण को विदा करते हुए सम्मिलित स्वर से जय हो ! सूर्य वंश के तरुण सूर्य समान तेजस्वी प्रख्यात बल पौरुष सम्पन्न रामलक्ष्मण की जय हो ।

तृतीय दृश्य पूर्ण

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.

http://www.jagadgururambhadracharya.org/

चतुर्थदृश्यम्

श्रीरामलक्ष्मणौ विश्वामित्रेण सह गच्छन्तौ

(नेपथ्ये)

गीतम्

शीतलपवन मञ्जु मंगलभवन स्वेदविन्दून् विशोषय हे।
स्यन्दनगमन कोमलं भानुमत् भानुवंश्यं प्रपोषय हे।
मृद्वी भव पावन बसुन्धरे दूरय शैलान् पुण्य निर्भरे।
कंटक विपिन लतातरुगणगहन मार्गखेदं विनोदय हे।
सरसिज शिरिष कुसुमसुकुमारौ, व्रजत इतो द्वौ राजकुमारौ।
भो नीलघन ! आतपत्रित गगन राजपुत्रौ प्रमोदय हे।
प्रकृते ! कुरु स्वागतमविलम्बं गायय मृदुपिक मधुपकदम्बम्।
गिरिधरनयननील सम्पुट सुधन कोसलेन्दुं विलोकय हे।।

श्रीरामलक्ष्मण विश्वामित्र जी के साथ जाते हुए –

(नेपथ्य में)

गीत

हे शीतलपवन ! सुन्दर एवं मंगलभवन श्रीराम के स्वेद बिन्दुओं को सुखा दो। हे रथगामी सूर्य देव ! सूर्यवंशोद्भव कोमल राम का पोषण करना । हे पुण्यशालिनी पवित्र वसुधे ! श्रीरामलक्ष्मण के लिए कोमल बन जाओं और उनके मार्ग से पर्वतों को दूर करो। हे कण्टक, वन, लता, वृक्ष समूह तुम श्रीराम के मार्ग में होनेवाले खेद को समाप्त कर दो। कमल और शिरीषपुष्प सदृश कोमल एवं सुकुमार दो राजकुमार इधर से जा रहे हैं। हे नीलमेघ ! आकाश में छाया करके दोनों राजकुमारो को आनन्दित करो, हे प्रकृति ! तुम श्री राम लक्ष्मण का अविलम्ब स्वागत करो तथा कोयल ओर भ्रमरों के समूह द्वारा मंगलगान कराओ। तथा गिरिधर (नाटककार श्रीरामभद्राचार्य) के नेत्ररूप नील सम्पुट के रत्न कोसलेन्द्र श्रीराम को निहारो।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

(अथ रामः लक्ष्मणं प्रति)

रामः-भ्रातः लक्ष्मण ! मदनुगमनकारणात् कोसलांस्त्यक्त्वा बन्धून् स्मरन् समुत्कष्ठसे किम् ?

लक्ष्मणः- आर्य ! उत्कण्ठायाः प्रश्न एव नोदेति। श्रीमच्चरणसरोजच्छायायां कोटिगुणितकोसलसुखं समनुभवामि। प्रभो। अन्तर्यामिणः समक्षं नालीकं वच्मि ।

न कामये स्वर्गमथापवर्गं न कोसलान् नैव धनं न बन्धून्।
परं पिपासा प्रभुपादपद्म प्रेमासवस्येव मधुव्रतस्य ।।१।।

भक्तवाञ्छाकल्पतरो !

मम जीवनमेव शत्रुहन् निजकैंकर्यविधौ नियुज्यताम् ।
इदमेव ममाभिवाञ्छितं कृपया पूरय भक्तवत्सल ।।२।।

रामः - (सानुरागम्) विश्वस्तो भव सौमित्रे ! नास्त्यत्र कोऽपि सन्देहः ।

याचित्वा कौशिकस्तातं मां त्वया सह लक्ष्मण ।
नित्यरामानुजत्वं ते सप्रमाणमचीक्लृपत् ।।३।।

(अनन्तर श्रीराम लक्ष्मण के प्रति)

राम– हे भ्राता लक्ष्मण ! मेरे अनुगमन के कारण अयोध्या को छोड़कर बन्धुओं का स्मरण करते हुए क्या तुम उत्कण्ठित हो ?

लक्ष्मण – भैया ! उत्कण्ठा का प्रश्न ही नहीं उठता । आपके चरणकमलों की छाया में करोड़ो गुना अयोध्या का सुख अनुभव कर रहा हूँ । हे प्रभो ! अन्तर्यामी आपके समक्ष असत्य नहीं कह रहा हूँ ।

मैं न तो स्वर्ग न अपवर्ग (मोक्ष) न अयोध्या, न बन्धु चाहता हूँ मुझे तो आपके श्रीचरणकमल के प्रेममकरन्द की प्यास है ।।१।।

हे भक्तों की इच्छा के लिए कल्पवृक्ष !

हे शत्रुहन्ता ! मेरा जीवन आपकी सेवा में लगे यही मेरा अभीष्ट है। हे भक्तवत्सल ! आप कृपा करके मेरी इच्छा को पूर्ण करें ।।२।।

राम – (प्रेम सहित) हे लक्ष्मण विश्वास रखो। इसमें कोई सन्देह नहीं हैं

विश्वामित्र जी ने पिताजी से मुझे तुम्हारे साथ माँगकर तुम्हारा सदा के लिए रामानुजत्व प्रमाणित कर दिया है। अर्थात् अब तुम नित्य रामानुज सिद्ध हो गये हो ।।३।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

विश्वामित्रः- **श्रुतो मया द्वयोः सम्वादः । वस्तुतस्तु विशिष्टाद्वैतवाद एव युवयोः ।**

न लक्ष्मणो बिना रामं न रामो लक्ष्मणं बिना ।

ब्रह्मजीवाविवाभिन्नौ शब्दार्थाविव शाश्वतौ ।।४।।

इत इत आगम्यतां सत्वरम् ?

लक्ष्मणः- **अये ! किमिव सत्वरम् ?**

यावद् वनं द्रुमगणान् व्रततीस्तृणानि,

नानामृगान् खगकुलानि सरित्सरांसि ।

पश्याव सिंहशिशुभिर्विहराव तुल्यैः ,

स्वैरं व्रजाव विपिनं त्वरया किमत्र ? ।।५।।

विश्वामित्र – मैंने तुम दोनों का सम्वाद सुना है । वास्तव में तुम दोनों का विशिष्टद्वैतवाद ही है। अर्थात् जैसे विशिष्टाद्वैतदर्शन में ब्रह्म चिद्विशिष्ट माना गया है उसी प्रकार लक्ष्मण भगवान राम के चिद् विशेषण ही हैं।

न तो लक्ष्मण बिना राम के रह सकते हैं और न राम ही बिना लक्ष्मण के दोनों ब्रह्मजीव की भाँति अभिन्न हैं तथा शब्द अर्थ की भाँति शाश्वत हैं ।।४।।

शीघ्र इधर आओ ।

लक्ष्मण – अरे ! शीघ्रता क्यों ?

जब तक बन, वृक्ष समूह लताएँ तृण, अनेक मृग पक्षी समूह, नदी तालाब आदि देखें और अपने समान सिंह शिशुओं के साथ खेलें और बन में स्वेच्छा से भ्रमण करें। यहाँ शीघ्रता से क्या लाभ ?।।५।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

विश्वामित्रः- (विहस्य) बालोऽसि सुमित्रानन्दन ! त्वरायाः किञ्चिदस्ति कारणम् ।

रामः - यदि श्रोतुं क्षमावावाम् तन्निगद्यताम् ।

विश्वामित्रः- काकुत्स्थ ! इतोऽविदूरमेव दशसहस्रनागबलाप्यबला सुकेतुतनया ताटका वसति ।

लक्ष्मणः- तेन किम् ?

विश्वामित्रः- सा खलु मानवगन्धमसहमाना कदाचिदाक्राम्येत् ।

लक्ष्मणः- तर्हि प्रतिकर्तव्या सा।

रामः - न खलु न खलु सौमित्रे ! नैव नारीजनेषु शूराः राघवाः । अतः कौशिकनिर्देशानुसारं तां वञ्चयित्वा व्रजेम ।

(तन्मध्ये एव दृश्यत अभिमुखं धावन्ती ताटका)

विश्वामित्र– (हँसकर) हे सुमित्रानन्दन ! तुम बालक हो । शीघ्रता का कुछ कारण है।

राम– यदि हमें सुनना उचित हो तो कृपया कहें।

विश्वामित्र– हे काकुत्स्थ ! यहाँ से थोड़ी दूर पर ही दस सहस्र हाथियों के समान बलवती होकर भी अबला सुकेत की पुत्री ताड़का रहती है।

लक्ष्मण – उससे क्या ?

विश्वामित्र– कदाचित् वह मानवगन्ध को न सहकर आक्रमण कर दे।

लक्ष्मण – तब उसका प्रतिकार करना चाहिए।

राम– नहीं ! नहीं लक्ष्मण! नारीजनों पर रघुवंशी शौर्य नहीं दिखाते । इसलिए गुरुवर्य के निर्देशानुसार उसको बचाकर चलें।

(इसी बीच में दौड़कर सममुख आती हुई ताड़का दिखती है)

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

विश्वामित्रः- पश्यतम् रामलक्ष्मणौ ! इयमागता अयुतगजबलसम्पन्ना कृतान्तमूर्तिरिव गोब्राह्मणानाम् ।

ताटकाः- तिष्ठत तिष्ठत रे मानवाः ! अद्य सर्वान् खादित्वा चिरकाल बुभुक्षितं स्वात्मानं तर्पयेयम् ।

(रामलक्ष्मणौ निरीक्ष्य) अये! इमौ तु सर्वाङ्गसुन्दरौ नयनलोभनीयौ बालकौ। अनयोः पुरतो मे जिघित्सा शाम्यति । तर्हि नैवैतौ भक्षयिष्यामि । किन्तु एतदग्रेसरं तपस्विनं तु प्रकामं भक्षयेयम्। (इति विश्वामित्राभिमुखी धावति)

विश्वामित्रः- (त्वरमाण इव राघवपृष्ठे गत्वा)

त्रायस्व ! त्रायस्व ! रणकर्कश, रघुवंशप्रदीप ! इयमधुना मां जिघित्सति ! अलमेत्र दयया, यतोहि -

येन धर्मस्य राष्ट्रस्य गवां वा कृतमप्रियम् ।
स नरोवाथवा नारी बध्यः शस्त्रभृतां स्मृतः ।।६।।

तदिमां वज्रकल्पशिलीमुखै र्निर्भिन्नमस्तकां विधाय मां रक्ष राघवेन्द्र !

विश्वामित्र– रामलक्ष्मण ! देखो दस सहस्र गजबल से युक्त गौ तथा ब्राह्मणों के लिए काल की मूर्ति सदृश यह आ गई।

ताड़का– अरे मनुष्यो ! ठहरो ठहरो ! आज तुम सबको खाकर चिकाल से क्षुधित अपपनी आत्मा को तृप्त करूँ

(राम लक्ष्मण को देखकर)

अरे ! ये दोनों तो सर्वाङ्गसुन्दर, नयनों को लुभाने वाले दो बालक हैं।

इनके सामने तो मेरा हिंसाभाव शान्त हो रहा है तो इन दोनों का भक्षण नहीं करूँगी किन्तु इनके आगे चलते हुए वृद्ध तपस्वी को तो निश्चय ही खाऊँगी । (इस प्रकार विश्वामित्र की ओर दौड़ती है)

विश्वामित्र– (शीघ्रता करते हुए राम के पीछे जाकर) हे रणकर्कश, रघुवंशदीपक राम ! मेरी रक्षा करो । रक्षा करो । यह अब मुझे खाना चाहती है । यहाँ दया गत करो क्योंकि –

जिसने धर्म, राष्ट्र और गौ का अहित किया है वह नर हो या नारी, शस्त्रधारियों द्वारा उसका वध कहा गया है ।।६।।

हे राघव ! वज्रतुल्य बाणों से इसका मस्तक काटकर, मेरी रक्षा करो।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

रामः- यथाज्ञापयति कुलपति (धनुषि वाणं सन्धाय अभिमन्त्र्य स्पष्टं सम्बोधयन्)

एकेनैवाद्य वाणेन ताटकामाततायिनीम् ।

निहन्मि कौशिकादेशात् दर्शयन् शस्त्रलाघवम् ।।६।।

(इति वाणं त्यजति)

वक्षसि विद्धा ताटका राम राम इति कथयन्ती म्रियते ।

(देवाःपुष्पाणि वर्षन्ति)

विश्वामित्रः- (प्रेत्यागत इव) (निःश्वरंय) अये मृता ताटका ।

लक्ष्मणः- अथ किम् । एकेनैव शरेण ममार्येण प्राणैर्वियोजिता ।

विश्वामित्र- साधु ! दिनकरकुलभूषण !

राम – जैसी कुलपति की आज्ञा। (धनुष पर बाण का सन्धान कर अभिमन्त्रित कर स्पष्ट सम्बोधन करते हुए)

इस आततायिनी ताड़का को कौशिक जी के आदेश से शस्त्रलाघव दिखाते हुए आज एक बाण से ही मारता हूँ ।।६।।

(इस प्रकार बाण छोड़ते हैं)

छाती में बाण लगते ही ताडका राम! राम! कहती हुई मर जाती है।

देवता पुष्पवर्षा करते हैं।

गन्धर्वा– जय जय समरदुर्मद प्रचण्ड धनुष की कला से इन्द्र को चकित करने वाले कोसलचन्द्र ! आपका कल्याण हो। विश्वामित्र (जीवित हुए की भाँति दीर्घश्वास लेकर) अरे ! ताड़का मर गई

लक्ष्मण– और क्या मेरे भैया के एक ही बाण से निष्प्राण कर दी गई ।

विश्वामित्र– बहुत अच्छा सूर्यकुल भूषण !

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

(पुनः रामं प्रति)

वत्स ! त्रिराचम्य मत्तो बलातितबलाभिधाने द्वे विद्ये आयुधजातानि च स्वीकुरु अद्यतोऽहं न्यस्तदण्डो भवामि।

(रामः तथा कृत्वा)

रामः- उपस्थितोऽस्मि ।

विश्वामित्रः- (किमपि कर्णे कथयति)

राघव ! अद्य त्वं सकलदिव्यास्त्रसम्पन्नः विद्याभ्यां बलातिबलाभ्यां युक्तः लोकेषु अप्रतिद्वन्द्वमहारथः अधुना कस्यामप्यवस्थायां शत्रवस्त्वां नाभिभवितुं शक्याः

लक्ष्मणः- (सहर्षम्) जयतु जयतु । कुशिककुलकैरवशीतांशुः ।

विश्वामित्रः- कुमारौ ! तद्गच्छामः सिद्धाश्रमं यत्र युवां मम मखरक्षणे सन्नद्धौ भविष्यथः ।

(फिर राम के प्रति)

वत्स ! तीन बार बाचमन करके मुझसे बला और बतिबला नाम की दोनों विद्याएँ तथा शस्त्रसमूह को स्वीकार करो। आज से मैं दण्डविधान का त्याग करता हूँ ।

(राम आचमन करके)

राम– उपस्थित हूँ ।

विश्वामित्र – (कान में कुछ कहते हैं)

हे राघव ! आज तुम सम्पूण्र दिव्यास्त्रों से समपन्न बला और अतिबला नाम की विद्याओं से युक्त तथा सम्पूर्ण लोको में अद्वितीय महारथी हो। अब किसी भी दशा में शत्रु तुम्हें परास्त न कर सकेंगे।

लक्ष्मण– (सहर्ष) हे कुशिककुलकैरवन्द्र! आपकी जय हो। जय हो ।

विश्वामित्र– हे कुमारो ! तो अब सिद्धाश्रम को चलें । जहाँ तुम दोनों मेरे यज्ञ की रक्षा में सन्नद्ध होओगे ।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

रामः- यथाज्ञायति ब्रह्मर्षिवर्यः । (इति आश्रमं आगच्छन्ति)

शिष्याः- (विश्वामित्रं प्रणम्य रामलक्ष्मणौ सभाजयन्ति । सुस्वागतं व्याहरामो दशरथयुवराजाय सानुजाय। आगच्छ। कृतार्थीकुरु तापसकुटीरम् ।

रामः- नमस्कुर्वो वटुभ्यः वैखानसेभ्यः ।

तापसाः- स्वस्ति युवाभ्याम् । तदधुनैव वयं यज्ञवेदीं व्यवस्थाप्य यष्टुमारभामहे । भवन्तौ तु आत्तशरासनौजागरूकौ दीक्षां प्रविष्टं कुलपतिं यज्ञं च त्रायेताम्।

अग्रतः पृष्टतश्चापि पार्श्वतश्च धृतव्रतौ ।

आकर्ण कृष्टकोदण्डौ त्रायेतां रामलक्ष्मणौ।।८।।

राम– ब्रह्मर्षिवर्य जैसी आज्ञा दें । (इस प्रकार आश्रम को आते हैं)

शिष्य– (विश्वामित्र जी को प्रणाम करके श्रीरामलक्ष्मण का स्वागत करते हैं) दशरथ युवराज का अनुज सहित स्वागत है। आइये । तपस्वियों की कुटीर को कृतार्थ कीजिए।

राम– ब्रह्मचारियों तथा साधुजनों को हम दोनों का नमस्कार ।

तपस्वी आप दोनों का कल्याण हो, तो हम अभी यज्ञ वेदी की व्यवस्था करके यज्ञ आरम्भ करते है। आप दोनों धनुष बाण सँभालकर सावधान होकर यज्ञ दीक्षा में प्रविष्ट कुलपति तथा यज्ञ की रक्षा करें।

आगे से पीछे से, अलग़बगल से रक्षा का व्रत धारण कर कर्णपर्यन्त धनुष को खींचकर आप दोनों हमारी रक्षा करें ।।८।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas. All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

रामः- यथाज्ञापन्ति ऋषयः

(धनुर्धरौ उपस्थितौ भवतः ऋषयश्च हवनं प्रारभन्ते)

समवेताः - इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् (अथ मारीचसुबाहू सहसा समापततः)

मारीचः - (अग्रेभूत्वा) पलायध्वं पलायध्वं जिजिविषपराः वृद्धब्राह्मणाः । समागतौ युष्मद्वंश बनानलौ मारीचसुबाहू ।

(सानुजः सम्मुखमागत्य रामः)

तिष्ठ ! तिष्ठ! रे ग्राम्यसिंह ! समुपस्थितोऽहं ब्राह्मणवंश वनाग्निनिर्वापकर्ता साम्वर्तको नीलमेघः दाशरथि रामः ।

मारीचः-(सकुतूहलम् रामलक्ष्मणौ निरीक्ष्य स्वगतम्)

अये ! भुवनविमोहनाविमौ कोसलराजतोकौ । अहो ! अत्रैव विधात्रा निखिललोकरचनाचातुरी व्यवस्थापितेव । क्षणमिमौ विलोकयन् आत्मनो पापानि मार्ष्टुं यते।

(इति मुहूर्त निपुणं विलोकयति) (पुनः)

अपसरतं युवां शिखण्डशेखरौ । कथमात्मानं मृत्यवे समर्पयितुकामौ ।

राम– ऋषि जैसी आज्ञा दें । (धनुर्धर श्रीरामलक्ष्मण उपस्थित होते हैं और ऋषि हवन प्रारम्भ करते है।

समवेत स्वर में– इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्

मारीच – (आगे होकर) भागो ! भागो जीवन के इच्छुक वृद्ध ब्राह्मणो ! भागो । तुम्हारे वंशरूप वन के लिए अग्नि के समान मारीच और सुबाहु आ गये हैं।

(अनुज लक्ष्मण सहित श्रीराम सामने आकर)

ठहर ! ठहर अरे कुत्ते ! ब्राह्मणवंश की वन की आग को बुझानेवाले सम्वर्तक नाम के नीले मेघ के समान मैं दशरथपुत्र राम आ गया हूँ !

मारीच – (आश्चर्य से रामलक्ष्मण को देखकर मन में)

अरे! महाराज दशरथ के दोनों राजकुमार सम्पूर्ण लोक के मोहक हैं। अहो ! मानो विधाता ने समस्त संसार का रचनाकौशल इन्हीं में भर दिया है। क्षणभर इनको देखकर अपने पापों को दूर करने का प्रयास करता हूँ । (इस प्रकार क्षणभर ध्यान से देखता है) फिर हे मयूरपिच्छधारी दोनों राजकुमारो ! दूर हट जाओ । क्यों स्वयं को मृत्यु को सौपना चाहते हो ?

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

रामः- न जानाम्यपसरणं रघुवंशबालकारणात् । तदधुना त्वामेव मानवास्त्रेण समपसारयामि ।

(इति वाणं निक्षिपति)

(तद्वेगेन समुद्रे क्षिप्तं विलोक्य लक्ष्मणं प्रति)

रामः- पश्य लक्ष्मण ! प्रबलप्रभंजनोद्धूत सुद्रतृणमिव मध्येसमुद्रं निक्षिप्तं विघूर्णमानं नीचं मारीचम् । अग्रे कपटमृगच्छलेन दशवदनकदनभूमिकार्थ नैतत्प्राणान् जिहीर्षामि ।

लक्ष्मणः- धन्योऽसि कोदण्डदीक्षागुरो !

(अथ भ्रातरं न दृष्ट्वा रोषकषायनेत्रः)

सुबाहुः - साधु कौसल्येय ! साधु समरश्लाधिन् !

राम राम महाबाहो सुबाहुं वेत्सि वा न वा ।
मागमस्तूलतां बालो मम क्रोधविभावसौ ।।६।।

रामः- (सासूयम्) मूढ पिशिताशन ! बालमिति मां मत्वा मम तेजोऽवजानासि ! पश्य इदानीमेव त्वत्पापेन्धनसमिद्धप्रबलप्रतापज्वालावलिलुलितकराल जिह्वविशिरव त्रिशिखे त्वामेव तूलतां नयामि ।

राम– रघुवंश का बालक होने के कारण मैं पीछे हटना नहीं जानता तो अब तुझे ही मानवास्त्र से दूर फैंकता हूँ (ऐसा कहकर बाण चलाते हैं बाण के वेग से मारीच को समुद्र में फैंका गया देखकर लक्ष्मण से)

राम – लक्ष्मण ! भयंकर आँधी से उड़ाकर फैंके गये तुच्छ तृण के समान बीच समुद्र में पडे एवं काँपते हुए नीचे मारीच को देखो। भविष्य में कपटमृग के बहाने रावण के विनाश की भूमिका के कारण इसे मारना नहीं चाहता

लक्ष्मण– हे धनुर्विद्या के दीक्षागुरु ! आप धन्य हैं।

(इसके बाद भाई को न देख क्रोध से लाल आँखे करके)

सुबाहु -- बहुत अच्छे ! कौसल्यापुत्र ! बहुत अच्छे ! युद्ध के महत्वाकांक्षी महाबाहु श्रीराम! आप सुबाहु को सम्भवतः नहीं जानते हो। हे बालक ! मेरे क्रोध की अग्नि में रुई मत बनो।

राम - (निन्दा पूर्वक) मांसभक्षी मूर्ख ! बालक समझकर मेरे क्षत्रियतेज का अपमान करता है देख ! तेरे पापरूप ईंधन के द्वारा प्रज्वलित प्रबलप्रतापरूप ज्वालासमूह से लपलपाती हुई कराल जीभवाले बाणरुप अग्नि में तुझे ही रुई बना दे रहा हूँ ।

(इति आग्नेयं सन्धाय प्रहिणोति)

(स क्षणाद् भस्मीभूतो दृश्यते)

ऋषयः- (प्रसन्नाः) साधु ! साधु !

देवाः- (पुष्पवृष्टिपुरस्सरम्) जितम् जितम् ।

कौशिकमखरक्षणच्छलेन लोकरावणरावण सुभटप्रथमद्वारम् ।

(गन्धर्वाः गायन्ति)

गीतम्

जयतां कोसलराकुमारौ।
श्यामगौरतनु रामलक्ष्मणौ खलकुलकमलतुषारौ ।।
रविकरवसननिषगकलितकटि करतलसायकचापौ।
करिकरसमभुजदण्ड विपुलबलवीर्यविहितपरतापौ ।।
कंबुकण्ठचिबुकाधरसुन्दरवदनविजित विधुशोभौ ।
नलिननयनसितहाससमर्पित मुनिजनमानसलोभौ ।।

(इस प्रकार आग्नेयबाण सन्धान कर छोड़ते हैं और सुबाहु क्षणभर में ही भस्म हुआ दिखाई पड़ता है)

ऋषिगण– (प्रसन्न होकर) साधु राघव साधु !

देवता– (पुष्पवृष्टिपूर्वक) कौशिक के यज्ञ की रक्षा के बहाने से लोकरावण रावण के वीर सैनिकों का प्रथम द्वार जीत लिया । जीत लिया ।

गन्धर्व– (गाते हैं) हे कोसल राजकुमार रामलक्ष्मण ! आपकी जय हो। हे श्यामल गौरशरीरधारी, दुष्टों के वंश रूप कमल के लिए तुषार रामलक्ष्मण ! आपकी जय हो। सूर्य की किरणों के समान पीतवस्त्रधारी सुन्दर कटि पर तरकस एवं करतल में धनुष बाण धारण किये हुए, हाथी के सूँड के समान भुजदण्ड वाले, अपार बलवीर्य से शत्रुओं को कष्ट देने वाले आप दोनों की जय हो। शंख के समान कंठ, ठोड़ी एवं अधर से युक्त सुन्दर मुख से चन्द्रमा की शोभा को जीतने वाले कमलनयन, सुन्दर हास्य से मुनिजनमानस को लुभाने वाले आपकी जय हो।

© Copyright 2012 Shri Tulsipeeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

पल्लवकुसुमशिखण्डशेखरौ निशिचरकदनकरालौ ।
विप्रधेनुसुरसाधुपालकौ मंजुलबालमरालौ ।।
त्रायेतां भारतवसुन्धरां हरतां भूतलभारम् ।
शरणागतगिरिधरं रक्षतां विलसितविषयविकारम् ।।

रामलक्ष्मणौ- (विश्वामित्रं प्रणम्य)

देव ! त्वत्प्रतापानले चास्मद् बाणज्वालासुदीपिते।
यज्ञविध्वंसिनः सर्वे क्षपाटाः शलभायिताः ।।१०।।

विश्वामित्रः- बाढम् बाढम् । साधु समाचरितं वीरपुंगवाभ्याम् । सफलो मे मनोरथः । तदधुनैव जनकराजेन समामन्त्रिताः धनुर्यज्ञं द्रष्टुकामाः मिथिलापुरीं व्रजामः ।

पत्रपुष्प एवं मयूरपिच्छ को आभूषण बनाने वाले राक्षसों के बध हेतु भयंकर विप्र धेनु, देवता और सज्जनों के पालक, सुन्दर बालहंस आप दोनों की जय हो । आप दोनों भारत भूमि की रक्षा करें और पृथ्वी के भार को दूर करें। तथा शरणागत विषय विकारग्रस्त गिरिधर (एकाकीकार) की रक्षा करें।

राम लक्ष्मण (विश्वामित्र को प्रणाम करके)

हे देव ! हमारे बाणों की ज्वाला से प्रज्वलित आपके प्रताप की अग्नि में सभी राक्षस पतंगों की भाँति जल गये ।।१०।।

विश्वामित्र– अच्छा ! अच्छा । आप दोनों वीरपुंगवों ने बहुत अच्छा किया। मेरा मनोरथ सफल हुआ। तो अब राजाजनक के आमन्त्रण पर धनुर्यज्ञ को देखने की इच्छा से हम मिथिलापुरी को चलते हैं

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

राम !

तत्र दृष्ट्वा धनुर्यज्ञं जनकस्य महात्मनः ।
सीतां वृणीष्व भद्रं ते यज्ञस्येव सुदक्षिणाम् ।।११।।

(आकाशाभिमुखाः)

श्रृण्वन्तु सर्वे लोकाः लोकपालाः । अद्य मम यज्ञरक्षाच्छलेन महासमरयज्ञस्य शुभारम्भः श्रीगणेशश्च कृतो भूभारावतरणस्य रामभद्रेण । नाचिरादेव-

संहृत्य सायककरैर्दशवक्त्र घोर,
नीहारमभ्युदित आप्तमहीसुताश्रीः ।
रोचिष्यते सुजनकञ्जसुखप्रतापो,
मध्याह्नभानुरिव भानुकुलावतंसः ।।१२।।

हे राम ! वहाँ जनक के धनुर्यज्ञ को देखकर यज्ञ की दक्षिणा के रूप में श्रीसीताजी का वरण करो । आपका कल्याण हो !" ११।।

(आकाश की ओर देखकर)

सब लोकपाल सुनें । श्रीरामभद्र ने मेरे यज्ञ की रक्षा के बहाने पृथ्वी के भार को उतारने रूपी समरयज्ञ का शुभारम्भ और श्रीगणेश आज कर दिया है ।

शीघ्र ही –

भयंकर बाणरूप किरणों से रावणरूप घोर कुहरे को नष्ट करके भूमिपुत्री सीतारूप दिव्यप्रभा को प्राप्त कर सज्जनरूपकमल कुल के सुखदायक प्रतापवाले मध्याह्न के सूर्य की भाँति सूर्यकुलभूषण भगवान श्रीराम अतिशीघ्र देदीप्यमान होंगे ।।१२।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

भरतवाक्यम्

मृडयतु गतभेदान् प्राणिनस्ताटकारिः
लसतु सुभुज शत्रोर्भक्तिगङ्गा जनेषु ।
वसतु मनसि नित्यं सीतया राघवो मे
भवतु भुवनभव्ये भारते रामराज्यम् ।।

(इति निष्क्रामन्ति सर्वे)

।। इति श्रीराघवाभ्युदयमेकांकिनाटकम् ।।

भरतवाक्य

ताड़का संहारक श्रीराम पारस्परिक भेद से शून्य राष्ट्रीयएकतावादी प्राणियों को सुखी करें। सुबाहु के शत्रु भगवान श्रीराम की भक्तिगंगा जनजन में लहराये । श्रीसीताजी सहित भगवान श्रीराम मेरे हृदय में निरन्तर रमते रहें तथा सम्पूर्ण भुवनों में श्रेष्ठ भारत में शीघ्र रामराज्य की स्थापना हो।

(सब निकल जाते हैं)

। श्रीराघवः शन्तनोतु ।

।। श्री राघवाभ्युदय एकांकीनाटक सम्पूर्ण हुआ।।

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.
http://www.jagadgururambhadracharya.org/

आर्चाय श्री के प्रकाशित ग्रन्थ •

१– मुकुन्दस्मरणम् (संस्कृत स्तोत्रकाव्यम्) भाग १–२

२– भरतमहिमा

३– मानस में तापस प्रसंग

४– परम बड़भागी जटायु

५– काका विदुर (हिन्दी खण्डकाव्य)

६– माँ शबरी (हिन्दी खण्डकाव्य)

७– जानकी कृपाकटाक्ष (संस्कृत स्तोत्रकाव्य)

८– सुग्रीव की कुचाल और विभीषण की करतुत

९– अरुन्धती (हिन्दी महाकाव्य)

१०– राघवगीत गुञ्जन (गीतकाव्य)

११– भक्तिगीत सुधा (गीतकाव्य)

१२– श्रीगीता तात्पर्य (दर्शन ग्रन्थ)

१३– तुलसी साहित्य में कृष्णकथा (समीक्षात्मक ग्रन्थ)

१४– सनातक धर्म विग्रह स्वरूपा गौमाता

१५ – मानस में सुमित्रा

१६–– श्रीरामानन्द सिद्धान्तचन्द्रिका (संस्कृत में दर्शन ग्रन्थ)

१७– श्रीनारद भक्ति सूत्रेषु राघवकृपाभाष्यम् (हिन्दी अनुवाद सहित)

१८– श्रीहनुमान चालीसा (महवीरी व्याख्या सहित)

१९– श्रीराघवाभ्युद्यम् (एकांकीनाटक हिन्दी अनुवाद सहित)

२०– प्रभुकरिकृपा पाँवरी दीन्ही ।

२१ श्रीरामबल्लभस्तोत्रम् (हिन्दी अनुवाद सहित)

२२ श्रीचित्रकूट विहार्यष्ट्कम् (हिन्दी अनुवाद सहित)

© Copyright 2019 Shri Tulsi Peeth Seva Nyas, All Rights Reserved.

http://www.jagadgururambhadracharya.org/

© Copyright 2012 Shri Tulsi Peeth All Rights Reserved.

http://www.jagadgururambhadracharya.org/